हिन्दी सान्ध्य दैनिक

जौनपुर से प्रकाशित

देश की उपासना

देश के विकास में समर्पित समाज के सभी वर्गों के लिए

वर्ष : 02 | अंक : 119 | जौनपुर, बुधवार 24 जनवरी 2024 | सान्ध्य दैनिक (संस्करण) | पेज – 4 | मूल्य : 2 रूपया

राम मंदिर में पहले दिन उमड़ा भक्तों का हुजूम, सुरक्षाकर्मियों को नियंत्रित करने में करनी पड़ी मशक्कत

एजेन्सी

अयोध्या। अयोध्या में नवनिर्मित राममंदिर में रामलला की नई मूर्ति की प्राण–प्रतिष्ठा के एक दिन बाद मंगलवार को जनता के लिए मंदिर के कपाट खोल दिए गए। मंदिर में दर्शन करने के लिए श्रद्धालुओं का हुजूम उमड़ पड़ा और उन्हें नियंत्रित करने के लिए सुरक्षाकर्मियों को कड़ी मशक्कत करनी पड़ रही है। इस दौरान हुई धक्का मुक्की में एक श्रद्धालु बेहोश हो गया। अनेक दर्शनार्थी सोमवार देर रात से ही कतार में लग गए थे। राम मंदिर के कपाट आम जनता के लिए मंगलवार सुबह खुल गए। दिन चढ़ने के साथ भीड़ भी बढ़ने लगी और लोग मुख्य प्रवेश द्वार की ओर बढ़ने लगे। भगवान राम के चित्र वाले झंडे लेकर और जय श्री राम के नारे लगाते हुए भक्त कड़ाके की ठंड में भव्य मंदिर के कपाट खुलने से घंटों पहले से इंतजार करते रहे। पंजाब से आए भक्त मनीष वर्मा ने कहा, ''बहुत खुशी महसूस हो रही है, मेरे जीवन का उद्देश्य पूरा हो गया है। हमारे पूर्वजों ने इसके लिए संघर्ष किया और अब इसे साकार किया गया है। व्यवस्था इसी तरह जारी रहनी चाहिए

और भगवान राम का नाम युगों–युगों तक कायम रहना चाहिए। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की उपस्थिति में सोमवार को अयोध्या स्थित मंदिर में रामलला की नई मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की गई। मोदी ने इस मौके को एक नए युग के आगमन का प्रतीक करार देते हुए लोगों का मंदिर निर्माण से आगे बढ़कर अगले 1000 वर्षों के मजबूत, भव्य और दिव्य भारत की नींव रखने का आह्वान किया। प्राण प्रतिष्ठा समारोह सम्पन्न होने के तुरंत बाद संतों सहित बड़ी संख्या में आमंत्रित लोगों ने देवता के दर्शन किए। मंदिर के बाहर लंबी कतारों में वे लोग भी इंतजार कर रहे हैं जो प्राण प्रतिष्ठा समारोह से पहले से ही अयोध्या में डेरा डाले हुए हैं और जिन्होंने अयोध्या तक पहुंचने के लिए लंबी और कठिन यात्राएं की हैं। मुख्य प्रवेश द्वार पर भीड़ में हंगामे के कारण एक भक्त बेहोश हो गया। उसे अस्पताल ले जाना पड़ा। भीड़ में बिहार के मधेपुरा जिले के नीतीश कुमार भी शामिल थे जो 600 किलोमीटर से अधिक साइकिल चलाकर अयोध्या पहुंचे। उन्होंने कहा, ''बहुत भीड़ है लेकिन मुझे उम्मीद है कि मुझे आज दर्शन करने का मौका मिलेगा। मेरी इच्छा पूरी होने पर मैं वापस अपनी यात्रा शुरू करूंगा। हालांकि, मैं सोमवार को मंदिर नहीं जा सका। राजस्थान के सीकर के अनुराग शर्मा को प्राण प्रतिष्ठा समारोह के दिन मंदिर की प्रतिकृति लेकर घूमते देखा गया। उन्होंने कहा, ''मैं इस मॉडल को अपने गृहनगर से साथ लाया था। मैं पहली उड़ान से अयोध्या पहुंचा और तब से यहीं हूं। मैं रामलला के दर्शन करने के बाद ही वापस जाऊंगा। पदयात्रा करने वाले आठ सदस्यीय समूह के सदस्य सुनील माधो ने कहा, ''राम लला ने हमें छत्तीसगढ़ से पूरे रास्ते चलने की शक्ति दी और अब वह ही हमें इस भीड़ से निकालेंगे ताकि हम उनका आशीर्वाद ले सकें। कुछ दिन पहले अयोध्या पहुंचे महाराष्ट्र के मूल निवासी गोपाल कृष्ण ने कहा,''हम कुछ दिन पहले यहां आए थे क्योंकि भगवान राम ने हमें बुलाया था। लोग हमें यात्रा न करने के लिए कह रहे थे क्योंकि पुलिस यात्रा पर प्रतिबंध लगा देगी और होटलों में कमरे उपलब्ध नहीं होंगे। हम एक आश्रम में रह रहे हैं और यही वह दिन है जिसका हम इंतजार कर रहे थे। गोपाल कृष्ण के साथ उनके कुछ दोस्त भी थे जिनके साथ उन्होंने चार पहिया वाहन से अकोला जिले से अयोध्या तक की यात्रा की। फूलों और रोशनी से सजाए गए मंदिर के द्वार भक्तों के लिए सेल्फी स्पॉट में बदल गए हैं। मंदिर परिसर की ओर बढ़ते समय भक्तों ने जय श्री राम के नारे लगाए। मुख्य मंदिर के अंदर उसके भव्य मंडप में जय श्री राम के नारे गूंज उठे। पारंपरिक नागर शैली में निर्मित मंदिर परिसर पूर्व से पश्चिम तक 380 फीट लंबा, 250 फीट चौड़ा है और शिखर 161 फीट ऊंचा होगा। मंदिर 392 स्तंभों पर आधारित है और इसमें 44 दरवाजे लगे हैं। लाखों लोगों ने सोमवार को अपने घरों और पड़ोस के मंदिरों में टेलीविजन पर प्राण प्रतिष्ठा समारोह देखा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मंदिर के गर्भगृह में अनुष्ठान के बाद कहा, ष्22 जनवरी, 2024, केवल कैलेंडर में एक तारीख नहीं है, बल्कि एक नए युग के आगमन की शुरुआत है। प्रधानमंत्री ने भगवान राम के बाल रूप की 51 इंच की मूर्ति को दंडवत प्रणाम भी किया। मोदी ने आमंत्रित लोगों को अपने संबोधन में कहा, ष्आज, हमारे राम आ गए हैं। युगों के लंबे इंतजार के बाद, हमारे राम आ गए हैं। हमारे रामलला अब तंबू में नहीं रहेंगे। हमारे रामलला एक भव्य मंदिर में रहेंगे।

नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की 127 वीं जयंती समारोह आयोजित

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय

लखनऊ। नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की 127 वीं जयंती समारोह के शुभ अवसर पर अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद के सदस्यों और अन्य उपस्थित गणमान्य लोगों ने सुभाष पार्क हजरत गंज में स्थापित नेताजी सुभाषचंद्र बोस की भव्य मूर्ति पर माल्यार्पण और पुष्पांजलि अर्पित करके नेता जी को नमन किया।

इस अवसर पर मेजर बीरेन्द्र सिंह तोमर अध्यक्ष अवध प्रांत ने उपस्थित जन समूह को संबोधित किया और नेता जी सुभाष चंद्र बोस की वीर गाथा और देश की आजादी में उनके योगदान और बलिदान को याद किया। अन्त में भारत माता की जय और नेता जी सुभाष चंद्र बोस अमर रहें के नारों से परिसर गुंजायमान हो गया।

अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद के सभी सम्मानित सदस्यों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कर कार्यक्रम को सफल बनाया जिसमें मुख्यतया मेजर बीरेन्द्र सिंह तोमर अध्यक्ष अवध प्रांत, कैप्टन इन्दल सिंह चंदेल, प्रदेश महा सचिव, कैप्टन जे वी एस चौहान, महा सचिव अवध प्रांत ॅ६ ललित मोहन पंत , उपाध्यक्ष लखनऊ महानगर, वी एन तिवारी, मिश्रा जी , कैप्टन अरविन्द सिंह सचिव लखनऊ महानगर, सूबेदार मेजर पी सुरेश कुमार , बृजेश सिंह , अभय कुमार सिंह आदि उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के अंत में सभी के लिए जलपान की व्यवस्था की गयी थी।

संगठन , सभी सदस्यों को इस कार्यक्रम में शामिल होने के लिए बहुत बहुत धन्यवाद और आभार प्रकट करता है भविष्य में होने वाले सभी कार्यक्रम में आप सभी की भागीदारी अपेक्षित है।

कैप्टन अरविन्द सिंह
सचिव,
अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद लखनऊ ने उक्त जानकारी दी।

सूर्यदेव भी चमके, मिली ठंड से राहत

बाराबंकी। रामनगरी अयोध्या में रामलला के प्राण प्रतिष्ठा के बाद सूर्य देव भगवान ने भी अपनी खुशी जताई है। यही वजह है कि आज दूसरे दिन भी तेज धूप से लोगों को ठंड से राहत मिली है। कई दिनों से आसमान में बादल छाए रहने और तेज हवाएं चलने से लोगों को ठंड से राहत नहीं मिल रही थीं। धूप निकलने के बाद लोगों ने अपने घर की छत पर बाहर निकाल कर इसका आनंद उठाया। हालांकि सुबह 11.00 बजे तक घना कोहरा छाया रहा। वाहन रेंगते हुए नजर आए। रामनगरी अयोध्या में रामलला के प्राण प्रतिष्ठा के बाद अचानक मौसम में बदलाव आ गया है। तेज धूप के चलते लोगों को ठंड से राहत मिलती दिख रही है। सोमवार को भी प्राण प्रतिष्ठा के दिन भी धूप निकली थी। जल्द कोहरा छटने के बाद लोगों को सूर्य देव के दर्शन हुए और लोग अपने–अपने काम पर निकले स्कूलों में भी बच्चों ने धूप का आनंद उठाया। घरों की छत पर और बाहर महिलाओं और बुजुर्गों ने धूप में बैठकर ठंड से राहत ली। बताते चले कि पिछले कई दिनों से लगातार आसमान में बादल छाए रहने और तेज हवा चलने से जीवन अस्त व्यस्त हो गया था।

राम लला की प्राण प्रतिष्ठा के बाद शशि थरूर का बड़ा बयान

एजेन्सी

नयी दिल्ली कांग्रेस कार्य समिति (सी.डब्ल्यू.सी.) के सदस्य और सांसद शशि थरूर ने मंगलवार को कहा कि प्रत्येक राम भक्त भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) का समर्थक नहीं है। इसके साथ ही उन्होंने सवाल किया कि उन्हें या उनकी पार्टी को भगवान राम को भाजपा के भरोसे क्यों छोड़ देना चाहिए। तिरुवनंतपुरम से सांसद थरूर ने कहा कि उनके जैसे अनेक लोग भगवान राम के भक्त हैं और यदि भविष्य में वह अयोध्या में राम मंदिर जाएंगे तो अपनी श्रद्धा व्यक्त करने जाएंगे, किसी को आहत करने नहीं। उन्होंने कहा कि धर्मनिरपेक्षता का अर्थ धर्महीनता नहीं है यानी सभी अपनी पसंद के धर्म का अनुसरण कर सकते हैं। थरूर सोशल मीडिया मंच 'एक्स पर भगवान राम से संबंधित अपने कई पोस्ट को लेकर स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया (एस.एफ.आई.) के कार्यकर्ताओं के प्रदर्शन के बाद यहां संवाददाताओं से बातचीत कर रहे थे। प्रदर्शनकारियों ने थरूर

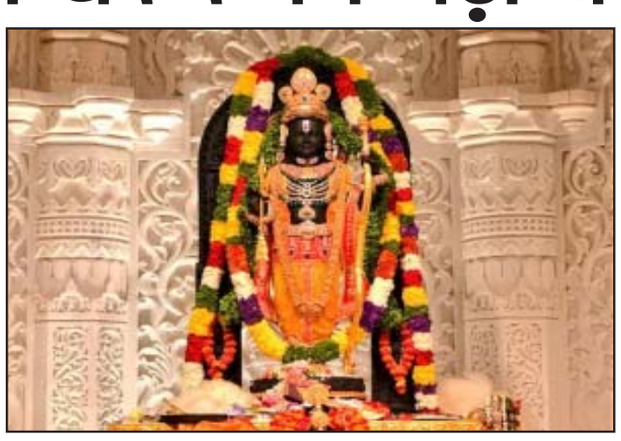

के खिलाफ नारे लगाए और उन्हें बेशर्म करार दिया। उनके हाथों में बैनर और पोस्टर थे जिन पर लिखा था, ष्शशि थरूर आप एक लोकतांत्रिक धर्मनिरपेक्ष राज्य के लिए कलंक हैं। कांग्रेस सांसद थरूर ने अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठित भगवान राम की मूर्ति की एक तस्वीर सोशल मीडिया पर पोस्ट की थी और साथ में सियावर राम की जय संदेश लिखा था। उन्होंने कहा कि वह अपने पोस्ट के माध्यम से श्री राम के प्रति अपनी श्रद्धा और राम की जय करते समय सीता जी को याद नहीं करने के बारे में अपना संदेश व्यक्त करना चाहते थे। थरूर ने कहा, ष्इसलिए, इसे इतना बड़ा मुद्दा बनाने की कोई जरूरत नहीं है। केरल स्टूडेंट्स यूनियन (के.एस.यू.) द्वारा आयोजित एक समारोह में थरूर को आमंत्रित किया गया था। उन्होंने कहा, ष्मुझे समझ नहीं आता कि जिस भगवान में मेरी आस्था है और प्रतिदिन जिनकी प्रार्थना करता हूं, उन्हें मुझे भाजपा के भरोसे क्यों छोड़ना पड़ेगा? उन्होंने कहा, भाजपा यह इच्छा रख सकती है कि राम भक्त उन्हें वोट दें। लेकिन क्या प्रत्येक राम भक्त भाजपा समर्थक है? यही प्रश्न है। मेरे विचार से ऐसा नहीं है। मैं यह भी पूछता हूं कि कांग्रेस को राम को भाजपा के भरोसे क्यों छोड़ देना चाहिए? हम भी भगवान की प्रार्थना कर सकते हैं। हमारा भी धर्म है। कांग्रेस नेता ने कहा कि उनकी पार्टी में कोई भी राम मंदिर का विरोध नहीं कर रहा। उन्होंने कहा, हम केवल इस समारोह के खिलाफ थे। उन्होंने कहा, अगर मैं किसी मंदिर में जाता हूं तो प्रार्थना करने के लिए जाता हूं, राजनीतिक कारणों से नहीं। किसी दिन मैं अयोध्या जाऊंगा लेकिन यह मेरी शर्तों पर होगा।श्श थरूर के मुताबिक उन्होंने पहले भी कहा है कि प्रत्येक हिंदू अयोध्या में राम मंदिर की आकांक्षा रख सकता है। उन्होंने कहा, ष्मैंने हमेशा कहा है कि मंदिर बनाने के लिए मस्जिद गिराने की जरूरत नहीं थी।

14 लोगों को ले जा रहा म्यांमार का विमान मिजोरम में दुर्घटनाग्रस्त, 6 घायल

एजेन्सी

आइजोल। म्यांमा का एक सैन्य विमान मंगलवार को आइजोल के बाहरी इलाके में स्थित लेंगपुई हवाई अड्डे पर दुर्घटनाग्रस्त हो गया। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि यह विमान म्यांमा के उन सैनिकों को वापस लेने के लिए यहां आया था, जो जातीय विद्रोही समूह अराकान आर्मी के साथ मुठभेड़ के बाद सीमा पार कर पिछले सप्ताह भारत आ गए थे। अधिकारियों के मुताबिक, दुर्घटना के वक्त विमान में छह लोग सवार थे और उनमें से तीन गंभीर रूप से घायल हुए हैं। अधिकारियों ने बताया कि विमान उतरते समय हवाईअड्डे के टेबलटॉप रनवे से आगे निकल गया और दुर्घटनाग्रस्त हो गया। उन्होंने बताया कि दुर्घटना इतनी भीषण थी कि विमान दो हिस्सों में टूट गया। अधिकारियों के मुताबिक, पिछले हफ्ते म्यांमा के कुल 276 सैनिक मिजोरम में घुस आए थे, जिनमें से 184 को सोमवार को वापस भेज दिया गया। उन्होंने बताया कि शेष 92 सैनिकों को मंगलवार को वापस भेजा जाना था। अधिकारियों के मुताबिक, विमान सैनिकों को म्यांमा के रखाइन राज्य के सितवे ले जाने वाला था। वहीं बता दें कि दिल्ली–एनसीआर में मंगलवार सुबह जबरदस्त कोहरा देखने को मिला। इससे आईजीआई हवाईअड्डे पर उड़ानों में देरी हुई। दिन की अन्य खबरों में, अयोध्या में राम मंदिर के बाहर भारी भीड़ देखी गई, जिसका उद्घाटन सोमवार को हुआ। दर्शन के लिए सुबह 3 बजे से ही बाहर भक्तों की कतार लग गई थी.

अररिया में दिनदहाड़े बैंक में डकैती, हथियारबंद बदमाश 90 लाख लूटकर हुए फरार

एजेन्सी

अररिया बिहार के अररिया जिले में दिनदहाड़े बैंक डकैती हुई है। करीब आधा दर्जन अपराधी बैंक में घुसे। इसके बाद हथियार के बल पर करीब 90 लाख रुपए लूटकर मौके से फरार हो गए। वहीं, इस घटना के बाद इलाके में सनसनी फैल गई है। जानकारी के मुताबिक, घटना अररिया शहर के एडीबी चौक स्थित एक्सिस बैंक की है। बताया जा रहा है कि मंगलवार सुबह रोजाना की तरह समय पर एक्सिस बैंक खुली। करीब साढ़े ग्यारह बजे करीब आधा दर्जन अपराधी बैंक में घुस गए। हथियारबंद अपराधियों को देखते ही बैंक के स्टाफ दहशत में आ गए। इसके बाद अपराधियों ने बैंक के कर्मचारी और ग्राहकों को बैंक के चेस्ट रूम में बंद दिया। इतना ही नहीं, अपराधियों ने डराने के लिए फायरिंग भी की और फिर बैंक में रखे रुपए लूटकर मौके से फरार हो गए। इधर, घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और कमरे में बंद लोगों को बाहर निकाला। पुलिस ने मौके से बैंक में खाली खोखा बरामद किया। बदमाशों ने बैंक से 90 लाख की लूट की है, लेकिन इसकी अधिकारिक पुष्टि अभी नहीं हो पाई है। फिलहाल पुलिस बैंक और आसपास के सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है।

गोयल क्रिकेट अकादमी ने रोमांचक मुकाबले में बीबी स्पोर्ट्स अकैडमी को दो रन से हराया

तृतीय राजीव चौधरी मेमोरियल जूनियर क्रिकेट चौंपियनशिप लीग

एजेन्सी

लखनऊ। आरव सिंह श्रीनेत (3 विकेट) की घातक गेंदबाजी से गोयल क्रिकेट अकादमी ने तृतीय राजीव चौधरी मेमोरियल जूनियर क्रिकेट चौंपियनशिप लीग के मुकाबले में बीबीडी स्पोर्ट्स अकादमी को एक रोमांचक मुकाबले में दो रन से पराजित पूरे अंक हासिल कर लिए। बाराबंकी के केडी सिंह बाबू स्टेडियम पर खेले गए मुकाबले में गोयल क्रिकेट अकादमी ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 9 विकेट पर 105 रन का मामूली स्कोर बनाया। टीम की की शुरुआत बेहद खराब रही और शीर्ष चार बल्लेबाज केवल 15 रन के स्कोर पर पेवेलियन लौट गए। हालांकि मध्य क्रम में विकास मौर्य ने 20 व विश्वम ने 16 रन बनाकर पारी को संभाल लिया। इन दोनों के अलावा आयुष सिंह ने 35 गेंद पर चार चौकों से 28 रन की उपयोगी पारी खेली। बीबीडी स्पोर्ट्स अकादमी से अफजल ने शानदार गेंदबाजी करते हुए चार ओवर में 26 रन देखकर चार विकेट चटकाए। आयुष ने तीन ओवर में 16 रन देकर तीन विकेट की सफलता हासिल की। जवाब में लक्ष्य का पीछा करते हुए बीबीडी स्पोर्ट्स अकादमी 18.5 ओवर में 103 रन पर ऑल आउट हो गयी। टीम की शुरुआत बेहद बेहद खराब रही और उसके पांच बल्लेबाज 36 रन के स्कोर पर चलते बने। कप्तान कप्तान अरुण कुमार प्रजापति ने 27 गेंदों पर 6 चौके से सबसे ज्यादा 33 रन बनाए। आर्यन भारती ने 15 रन जोड़े। इन दोनों के अलावा कोई भी बल्लेबाज टिककर नहीं खेल सका। गोयल क्रिकेट अकादमी के गेंदबाजों ने बेहद शानदार प्रदर्शन किया। इसका नतीजा यह रहा कि बीबीडी स्पोर्ट्स अकादमी के 9 बल्लेबाज दोहरे अंक तक नहीं पहुंच पाए।

अयोध्या में प्रधानमंत्री ने 'शो किया, मंदिर के नाम पर लहर नहीं : राहुल

एजेन्सी

गोवहाटी। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने मंगलवार को कहा कि राम मंदिर के नाम पर लहर नहीं है तथा अयोध्या में सोमवार को जो हुआ वह एक राजनीतिक कार्यक्रम था जिसमें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'शो किया। उन्होंने संवाददाताओं से बातचीत करते हुए यह भी कहा कि असम में उनकी 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा में अवरोध पैदा करने का जितना प्रयास किया जा रहा है उससे उनकी यात्रा को उतना ही प्रचार मिल रहा है। राहुल गांधी का कहना था कि कि मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा के धमकाने वाले कदमों से वह डरने वाले नहीं हैं।

यह पूछे जाने पर कि 'राम लहर का मुकाबला करने के लिए उनके पास क्या योजना है, तो कांग्रेस नेता

ने कहा, ''ऐसी कोई बात नहीं है कि लहर है। यह भाजपा का राजनीतिक कार्यक्रम था। नरेन्द्र मोदी जी ने फंक्शन किया, शो किया। वो सब ठीक है, अच्छी बात है। लेकिन हम स्पष्ट हैं कि देश को मजबूत बनाने के लिए 'पांच न्यायश की योजना हमारे पास है। यह हम आपके सामने रखेंगे। इस सवाल पर कि क्या वह यात्रा के दौरान अयोध्या जाकर राम मंदिर का दर्शन करेंगे तो राहुल गांधी ने कहा कि फिलहाल वह यात्रा मार्ग का अनुसरण करेंगे। पार्टी की ओर से तय यात्रा मार्ग में अयोध्या शामिल नहीं है। प्रधानमंत्री मोदी की अगुवाई में सोमवार को अयोध्या के मंदिर में रामलला की नयी मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की गई। प्रधानमंत्री ने इस अवसर को एक नए युग के आगमन का प्रतीक करार दिया और लोगों से मंदिर निर्माण से आगे बढ़कर अगले 1,000 वर्षों के मजबूत, भव्य और दिव्य भारत की नींव बनाने का आह्वान किया। राहुल गांधी ने 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा का उल्लेख करते हुए कहा, ''इस यात्रा के पीछे न्याय का विचार है। इसमें न्याय के पांच स्तंभ हैं– युवा न्याय, भागीदारी, नारी न्याय, किसान न्याय और श्रमिकों के लिए न्याय। ये पांच स्तंभ देश को शक्ति देंगे। कांग्रेस अगले एक–डेढ़ महीने में इन्हें जनता के सामने रखेगी। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष ने प्रधानमंत्री पद की उम्मीदवारी से जुड़े सवाल पर कहा कि विपक्षी गठबंधन 'इंडिया चुनाव के बाद इस बारे में चर्चा कर कोई निर्णय लेगा। उनका कहना था, ''एक तरफ नरेन्द्र मोदी और आरएसएस हैं और दूसरी तरफ 'इंडिया। 'इंडिया एक विचारधारा है, एक सोच है। 'इंडिया के पास देश का 60 प्रतिशत वोट हैं। असम में कुछ जगहों पर यात्रा में अवरोध से जुड़े सवाल पर उन्होंने चुटकी लेते हुए कहा, ''असम के मुख्यमंत्री जो कर रहे हैं, उससे यात्रा को फायदा हो रहा है। जो प्रचार हमें नहीं मिलता, वो मिल रहा है। उसमें असम के मुख्यमंत्री और शायद उनके पीछे अमित शाह हमारी मदद कर रहे हैं। असम में आज मुख्य मुद्दा यात्रा बन गया है। उन्होंने जोर दिया, ''हम इनसे डरते नहीं है। हमारा संदेश गांव–गांव में जा रहा है। राहुल गांधी का कहना था कि वह सच्चाई और अपनी विचारधारा के साथ हैं।

सम्पादकीय

प्राण-प्रतिष्ठा

निश्चित रूप से अयोध्या में राम जन्मभूमि मंदिर में गरिमामय प्राण प्रतिष्ठा देश के धार्मिक–सांस्कृतिक इतिहास में एक युगांतरकारी घटना है। पांच सौ साल तक धैर्य से आंदोलनरत रहने के बाद जब यह दिन आया तो देश में उल्लास स्वाभाविक ही है। इस दिन को देखने की आस में कई पीढ़ियां इंतजार करके परलोक गमन कर गईं। दुनिया में यह अपने आप में शायद पहला उदाहरण होगा कि एक स्वतंत्र देश में अपने आराध्य के जन्मस्थान पर आस्थास्थल के निर्माण में पौन सदी तक कानूनी प्रक्रिया चली हो। फिर न्यायिक फैसले के अनुरूप ही धार्मिक स्थल का निर्माण सुनिश्चित हुआ हो। यही भारतीय समाज में गंगा–जमुनी संस्कृति की खूबसूरती है कि दोनों पक्षों ने न्यायालय के आदेश का सम्मान किया। निस्संदेह, भारतीय लोकजीवन में राम रचे–बसे हैं। भारतीय संस्कृति और अस्मिता के प्रतीक हैं। ऐसे प्रतीक जिससे बहुसंख्यक समाज ऊर्जा हासिल करता है। लोकव्यवहार में उनके आदर्शों की स्वीकार्यता इतनी अधिक है कि हर साल लोकमान्यताओं पर आधारित लीलाओं का मंचन रामलीला के रूप में किया जाता है। देश–देहात में जब अनजाने लोग भी मिल जाते हैं तो राम–राम कहकर अभिवादन करते हैं। ऐसे में अयोध्या में भव्य–दिव्य–नव्य राम मंदिर का एक संदेश यह भी है कि हम श्रीराम के आदर्शों व जीवन मूल्यों का अनुपालन अपने दैनिक जीवन में भी करें। कोशिश हो कि विविध संस्कृतियों वाले देश में राम की स्वीकार्यता को नया विस्तार मिले। साथ ही सत्ताधीश भी रामराज्य की अवधारणा को अपना आदर्श मानकर विभिन्न धर्मों व संस्कृतियों वाले देश में समरसता का समाज बनाने को प्रयासरत रहें। निस्संदेह, राम राजनीति के विषय नहीं हैं, राष्ट्रीय अस्मिता के प्रतीक हैं। हम न भूलें कि हमारा संविधान भी रामराज की अवधारणा की आकांक्षा रखता है। बीसवीं सदी में जब देश ने उपनिवेशवाद के खिलाफ लड़ाई जीतकर आजादी पाई तो स्वतंत्रता आंदोलन के नायकों ने देश में शासन में रामराज्य का आदर्श देखा था। उनके मन में रामराज्य की लोककल्याणकारी छवि केंद्रित थी।कह सकते हैं कि हमारे संविधान निर्माताओं ने रामराज्य को एक समावेशी लोकतांत्रिक व्यवस्था के रूप में देखा। इसकी वजह है कि भारत एक बहुसांस्कृतिक व बहुधर्मी देश है। जिसके चलते भारतीय गणराज्य की कल्पना एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र के रूप में की गई। महात्मा गांधी ने भी रामराज्य का सपना देखा था। ऐसा रामराज्य जिसमें पारदर्शिता के साथ वास्तविक सुशासन हो। एक आदर्श सुशासन की व्यवस्था ही उनके लिये सच्चा लोकतंत्र था। जिसमें राजा और रंक के समान अधिकार हों। उनकी दृष्टि में रामराज्य ममता समता का शासन था। सत्य और धर्म उसका आधार था। यद्यपि उनकी दृष्टि में राम–रहीम में कोई भेद नहीं था। बहरहाल, अब जब सदियों के विवाद का पटाक्षेप करके अयोध्या में राममंदिर की प्राण प्रतिष्ठा का कार्य विधिवत संपन्न हो गया है तो देश का ध्यान हमारे सामने मौजूद अन्य विकट चुनौतियों पर हो। यह खुशी की बात है कि देश दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है। लेकिन हमें अब देश में व्याप्त बेरोजगारी, महंगाई और आर्थिक असमानता को दूर करने को अपनी प्राथमिकता बनाना होगा। वहीं अयोध्या में राममंदिर का बनना इस मायने में महत्वपूर्ण है कि धार्मिक पर्यटन से पूर्वी उत्तर प्रदेश में रोजगार के तमाम नये अवसर मिलेंगे। देश की सबसे बड़ी आबादी वाले राज्य उत्तर प्रदेश को धार्मिक पर्यटन से आर्थिक लाभ होगा। काशी विश्वनाथ तीर्थ के कायाकल्प के बाद अयोध्या में संरचनात्मक विकास को नये आयाम मिले हैं। हवाई अड्डे, सरयू में नौकायन और फॉर लेन सड़कों के निर्माण से आर्थिक विकास को गति मिलेगी। लेकिन ध्यान रहे कि अब आज के केवट व सबरी के घर भी आर्थिक विकास की रोशनी पहुंचे। राम–रहीम की गंगा जमुनी संस्कृति को संवारा जाए। अमृतकाल का अमृत समाज के अंतिम व्यक्ति तक भी पहुंचे। सही मायनों में रामराज्य की वास्तविक अवधारणा साकार रूप ले। सत्ताधीश राजनीतिक और सामाजिक जीवन में मर्यादा की भी प्रतिष्ठा करें। उसमें श्रीराम के समावेशी दृष्टिकोण की आभा नजर आए। जिसमें केवट, शबरी, निषादराज, जटायु, सुग्रीव आदि को भी न्याय मिले।

आज का राशिफल

मेष :– विचारों की अस्थिरता आपको उलझनपूर्ण परिस्थिति में डालेगी। नौकरी–व्यवसाय के क्षेत्र में स्पर्धायुक्त वातावरण रहेगा। नए कार्य करने के लिए प्रेरित होंगे। प्रवास की संभावना है।

वृषभ :– मन की दुविधा ठोस निर्णय पर आने से रोकेगी जिससे हाथ आए अवसर आप खो देंगे। झक्की व्यवहार के कारण संघर्ष में उतरने की संभावना है। नए कार्य के लिए दिन अच्छा नहीं है।

मिथुन :– आज का दिन लाभदायक साबित होने की आशा रख सकते हैं। सुबह से ताजगी और प्रसन्नता का अनुभव होगा। आर्थिक लाभ मिलने के साथ–साथ कहीं से गिफ्ट प्राप्त हो सकता है।

कर्क :– शरीर और मन में बेचौनी और अस्वस्थता का अनुभव होगा। मन की संदिग्धता और दुविधा आपकी निर्णयशक्ति को कसौटी के शिखर पर चढ़ाएंगे। वाद–विवाद से दूर रहें।

सिंह :– आज के दिन आपको विविध लाभ मिलने की संभावना है। ऐसे समय में मन का ढीलापन आपको लाभ से वंचित न कर दे, इसका ख्याल रखें। पदोन्नति और आय वृद्धि का योग है।

कन्या :– नए कार्य शुरू करने के लिए निर्मित योजनाओं को अमल में लाने का आज उत्तम समय है। व्यापार में लाभ होगा। बकाया वसूली के पैसे वापस मिलेंगे। पिता की तरफ से लाभ होगा।

तुला :– लंबी दूरी की यात्रा या धार्मिक स्थान की मुलाकात होगी। विदेश यात्रा के लिए अनुकूलता रहेगी। फिर भी आपको संतान और स्वास्थ्य के सम्बंध में चिंता रहेगी। धन का खर्च होगा।

वृश्चिक :– आज का दिन सावधानीपूर्वक बिताएं। नए कार्य शुरू न करें। क्रोध, आवेश और अनैतिक आचरण आपको कठिनाई में डाल सकते हैं। दुर्घटना से बचें।

धनु रू बौद्धिक, तार्किक, विचार–विनिमय और लेखन कार्य के लिए शुभ दिन है। भागीदारी में लाभ होगा। जीवनसाथी के साथ के सम्बंधों में अधिक घनिष्ठता रहेगी। मान–सम्मान मिलेगा।

मकर :– आज से आपके व्यापार–धंधे का विकास होगा। आर्थिक रूप से लाभदायक दिन होने से पैसे की लेन–देन में सरलता रहेगी। परिवार में सुख– शांति का माहौल रहेगा।

कुंभ :– आज आप संतान और अपने स्वास्थ्य के सम्बंध में चिंतित रहेंगे। अपच, पेट–दर्द से परेशान होंगे। विचारों में तेजी से परिवर्तन मानसिक स्थिरता में खलल पहुंचाएगा।

मीन :– शारीरिक– मानसिक भय रहेगा। कुटुंबीजनों के साथ वाद–विवाद होगा। माताजी का स्वास्थ्य खराब होगा। अनचाही घटनाओं से आपके उत्साह में कमी आएगी। अनिद्रा से परेशान रहेंगे।

प्रतिष्ठा मूर्ति में प्राण की या हिंदू राज की

राजेंद्र शर्मा

प्राण प्रतिष्ठा के साथ, अयोध्या में भव्य राम मंदिर खुल गया है। बेशक, यह मंदिर विशाल और भव्य है, हालांकि उसे और विशाल तथा भव्य बनाए जाने का काम, अभी कई बरस और जारी रह सकता है। बेशक, यह अयोध्या के राम से जुड़े सभी मंदिरों का ही सिरमौर नहीं है, अयोध्या का ही सिरमौर होगा और देश भर में सबसे बड़ा और सबसे महत्वपूर्ण राम मंदिर होगा। जाहिर है कि इस मंदिर की भव्यता में, जिस धूम–धड़ाके के साथ इसका उद्‌घाटन हुआ है, उससे चार–चांद लग गए हैं। और इस धूम–धड़ाके के केंद्र में है, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का इस उद्‌घाटन का मुख्य कर्ता होना। यह सवाल करने वाले बहुत गलत भी नहीं हैं कि यह मंदिर राम का है, मोदी का है। मंदिर मोदी का न सही, पर मोदी के राम का जरूर है! यह मंदिर कौशल्या नंदन का या दशरथ सुत का नहीं है, यह मंदिर लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न के भ्राता का नहीं है, यह मंदिर सीतापति या मर्यादा पुरुषोत्तम का हर्गिज नहीं है, यह सबसे बढ़कर मोदी के राम का मंदिर है। मोदी के राम का अर्थ नरेंद्र दामोदार दास मोदी नाम के व्यक्ति के ही राम का नहीं है, वह व्यक्ति भले ही देश के सबसे शक्तिशाली पद पर बैठा हुआ और इसलिए, मंदिर समेत किसी भी चीज के उद्‌घाटन शिलापट्ट पर अपना नाम नक्श कराने की हैसियत में ही क्यों नहीं हो। मोदी के राम यानी उस पूरी प्रक्रिया के राम, जिसने खुद मोदी को देश में सत्ता के सर्वोच्च पद पर भी पहुंचाया है और उनके माध्यम से अंततरू अभूतपूर्व धूम–धड़ाके तथा मान्यता के साथ, इस मंदिर को शब्द के सभी अर्थों में एक वास्तविकता बनाया है। इस पूरी प्रक्रिया का बीज शब्द है, मंदिर का वहीं बनना। इस मंदिर की असली महत्ता इसके राम के जन्म स्थान पर बना मंदिर होने आस्था या राम के बाल रूप का मंदिर होने आदि, आदि में नहीं है। इसकी सबसे ज्यादा महत्ता इस मंदिर के वहीं बनाए जाने के दावे में निहित है। वहीं यानी वहां, जहां बाबरी मस्जिद चार सौ साल से ज्यादा से खड़ी थी, जिसे सबने देखा था। यह दूसरी बात है कि वहां और भी पहले राम जन्म स्थल रहने के दावे छुट–पुट तौर पर ब्रिटिश हुकूमत के दौर में भी किए गए थे और इन दावों ने तब से और जोर पकड़ लिया था, जब 1949 के दिसंबर में एक मध्यरात्रि में मस्जिद का दरवाजा तोड़कर, उसके अंदर रामलला की मूर्ति प्रकट करा दी गई।

इसके बावजूद, यह विवाद करीब ढाई दशक तक, मुख्यतरू स्थानीय या ज्यादा से ज्यादा इलाकाई तथा कानूनी विवाद ही बना रहा, सिवा इसके कि मस्जिद पर अतिक्रमणकारी शहिंदू आस्था का कब्जा बना रहा, हालांकि मस्जिद में जबरन बना दिया गया कथित मंदिर भी, पुजारी के सिवा आम श्रद्धालुओं के लिए बंद ही रहाय उन्हें जंगले के पार दूर से ही श्दर्शनश करना उपलब्ध था। दूसरी ओर, मुसलमानों के लिए मस्जिद में प्रवेश की पूरी तरह से मनाही कर दी गई। यह स्थिति तब तक चली, जब तक कि 1984 में भाजपा के दो सीटों पर सिमट जाने के बाद, श्गांधीवादी समाजवादश के उसके नये–नये अपनाए गए मुखौटे को पूरी तरह से दफनही नहीं कर दिया गया। अब आरएसएस से जुड़े मंचोंध संगठनों ने अयोध्या राम मंदिर के मुद्दे को हवा देने के लिए, यात्राएं निकालनी शुरू कर दीं और अदालती लड़ाई में नयी तेजी आ गई। इसी के सामने और संभवतः इसे जोर पकड़ने से पहले ही निपटा देने की तत्कालीन सत्ताधारी कांग्रेस पार्टी की सवा–चतुराई में, 1986 में मजिस्ट्रेटी आदेश से मस्जिद में बने कथित मंदिर के दरवाजे लोगों के लिए खुलवा दिए गए।

यहां से घटनाक्रम ने बहुत तेजी पकड़ ली। अब मस्जिद को हटाने की मांग ने जोर पकड़ा। विहिप आदि आरएसएस के अन्य आनुषांगिक संगठनों के बाद, 1988 से उसके राजनीतिक मोर्चे के रूप में भाजपा भी बाकायदा इसकी मांग में शामिल हो गई कि बाबरी मस्जिद को हटाकर, वहीं एक भव्य मंदिर बनाया जाए। यहां से आगे घटनाचक्र और तेजी से घूमा। मस्जिद की जमीन पर किंतु उसकी मुख्य इमारत से जरा हटकर, शिलान्यास के जरिए कं प्रोमाइज की एक और विफल कोशिश हुई। लेकिन, इसने मंदिर के मुद्दे के राजनीतिक उपयोग की भूख को बढ़ाने का ही काम किया। मंडल की काट के लिए 1990 के सितंबर में आडवानी के रथयात्रा पर निकलने और 6 दिसंबर 1992 को कारसेवकों की विशाल भीड़ों को जुटाकर और उस समय उत्तर प्रदेश में मौजूद भाजपा सरकार की मिलीभगत तथा सुप्रीम कोर्ट के साथ धोखेधड़ी से और एक हद तक केंद्र की नरसिम्हा राव सरकार की मूक सहमति से भी, बाबरी मस्जिद के ढहा दिए जाने और वहीं एक अस्थायी मंदिर खड़ा कर दिए जाने के बीच, मुश्किल से दो साल का अंतराल रहा। ऐलान कर के, भीड़ें जुटाकर, सारी दुनिया के देखते–देखते, शासन–प्रशासन को पूरी तरह से पंगु करते हुए, बाबरी मस्जिद का ढहाया जाना, बेशक उस धर्मनिरपेक्ष व्यवस्था पर सबसे बड़ा प्रहार था, जिसे आजादी की समावेशी लड़ाई से निकले, इस देश ने अपनाया था और संविधान के जरिए बाकायदा स्थापित किया था। इसके बाद करीब तीन दशक तक जो हुआ, उसे शासन की और उससे बढ़कर न्यायपालिका की मिलीभगत से लेकर अनुमोदन तक से, धर्मनिरपेक्षता व्यवस्था के तकाजों का भीतर–भीतर से खोखला किया जाना ही कहा जाएगा। पहले, तमाम साक्ष्यों तथा सार्वजनिक जानकारियां उपलब्ध होने के बावजूद, कानून के साथ तरह–तरह के खिलवाड़ों के जरिए, मस्जिद के ध्वंस के अपराध को, बिना किसी सजा के बल्कि बिना किसी दोषसिद्‌घ के ही छोड़ दिया गया। फिर, पुरातात्विक खुदाई के जरिए, इस आधार पर मस्जिद के ढहाए जाने को उचित सिद्‌घ करने की राह बनाई गई कि, क्या ध्वस्त मस्जिद किसी मंदिर के ऊपर बनाई गई थी? और अंततरू अदालतों ने मस्जिद ध्वस्त करने वाले, शहिंदू पक्षश की विवादित स्थल पर दावेदारी के पक्ष में फैसले देना शुरू कर दिया। 2010 के सितंबर में इलाहाबाद हाई कोर्ट ने विवादित 2.77 एकड़ जमीन में से दो हिस्सा हिंदू पक्ष और एक हिस्सा मुस्लिम पक्ष में देने का फैसला सुनाया। इस निर्णय के खिलाफ अपीलों में 2019 के नवंबर में सुप्रीम कोर्ट की संविधान पीठ ने जो फैसला सुनाया, उसमें पूरी विवादित भूमि हिंदू पक्ष को दे दी गई और सरकार के लिए इसकी ओट की भी सुविधा जुटा दी गई कि मंदिर तो, अदालत के आदेश से, इसके लिए गठित ट्रस्ट बनाएगा। सर्वोच्च न्यायालय का यह फैसला इस माने में खासा बेतुका था कि खुद अदालत ने दो बातें मानी थीं। एक यह कि इसके कोई साक्ष्य नहीं थे कि मस्जिद, किसी मंदिर को तोड़कर बनाई गई थी। दूसरे, मस्जिद का तोड़ा जाना, एक घनघोर अपराध था। इसके बावजूद, इस घनघोर अपराध के पीछे जो मंशा थी, उसे अदालत के इस फैसले ने इससे जुड़े पक्ष को विवादित जमीन देकर पूरा कर दिया। लेकिन, उक्त मंदिर–मस्जिद विवाद को लेकर, इस पूरे दौर में देश में उत्तरोत्तर बढ़ाई गई बहुसंख्यकवादी–हिंदूवादी राय को देखते हुए और इस आम राय के फलस्वरूप देश में तथा उत्तर प्रदेश समेत अनेक राज्यों में इस विवाद में बहुत पहले से ही एक पक्ष बन चुकी भाजपा के ठस्से से सत्ता में आने से, न्यायपालिका पर बढ़ते दबाव को देखते हुए, इस तरह का बेतुका फैसला आश्चर्यजनक भी नहीं है। यह सिर्फ संयोग ही नहीं है कि मोदी सरकार, जो अब करीब–करीब खुलकर राम मंदिर बनने के श्रेय के लिए दावे कर रही है और श्जो लाए हैं राम कोश के नारे लगा रही है तथा पोस्टरों में मोदी को रामलला को उंगली पकड़कर लाते दिखा रही है, 2014 में सत्ता में आने के बाद से ही उच्चतर न्यायपालिका पर नकेल डालने के लिए भिड़ी रही है और उस पर हमेशा सरकार की इच्छा के अनुकूल फैसले न देने के लिए, खुलेआम हमले भी करती रही है। बहरहाल, अगर बाबरी मस्जिद का ध्वंस, भारत की धर्मनिरपेक्षता पर सबसे बड़ा हमला था, तो बाबरी मस्जिद के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट का फैसला, भारतीय राज्य की ओर से, न्यायपालिका जिसका बहुत ही महत्वपूर्ण अंग है, धर्मनिरपेक्षता का बाकायदा त्यागा जाना था। और 22 जनवरी 2024 को अयोध्या में और वास्तव में सचेत रूप से देश भर में फैलाकर जो किया गया है, वह धर्मनिरपेक्षता के विधिवत त्याग के बाद का अगला तार्किक कदम हैकृ बहुसंख्यकवादी हिंदुत्ववादी राज यानी हिंदू राज का ऐलान। बेशक, प्रधानमंत्री मोदी ने कथित प्राण प्रतिष्ठा के बाद के अपने संबोधन में उदारता दिखाने की सचेत कोशिश की है। और तो उन्होंने यह याद दिलाने का जिम्मा भी मुख्यमंत्री, आदित्यनाथ पर ही छोड़ दिया कि आखिरकार, राम मंदिर श्वहींश बना हैय उन्होंने बस सैकड़ों साल के संघर्ष, तपस्या आदि के अपेक्षाकृत गोल–मोल हवाले से ही काम चला लिया। और तो और, प्रधानमंत्री मोदी ने प्रकटतरू मंदिरवादियों को ठंडा करने की कोशिश में, उन्हें यह भी याद दिलाया कि यह विजय का ही नहीं, विनय का भी समय है! लेकिन, प्रधानमंत्री के संबोधन की कम से कम दो बातों से एकदम साफ था कि अब उनसे एक हिंदू राज के प्रमुख के आचरण की ही अपेक्षा की जाए। एक तो प्रधानमंत्री ने कश्मीर के मामले में उनके शासन द्वारा बार–बार सुनाए जाने वाले इस टॉन्ट को इस मामले में पूरे देश के लिए और संभवतरू उनके हिसाब से मुस्लिम अल्पसंख्यकों के लिए दोहराया कि कहा जाता था कि अयोध्या में मंदिर बना तो आग लग जाएगी, पर कुछ भी नहीं हुआ! दूसरे, श्री मोदी ने जिस तरह देव से देश और राम से राष्ट्र तक चेतना के विस्तार की बात बार–बार कही, एक धर्माधारित राष्ट्र राज्य के ऐलान के सिवा और कुछ नहीं है। इसे देखते हुए, इसमें हैरानी की रत्तीभर बात नहीं है कि केंद्र तथा राज्यों की भाजपा सरकारों ने, इस आयोजन के सिलसिले में शासन और धर्म को खुलेआम मिला दिया है बल्कि इसे शासन का धर्म ही बना दिया है। नहीं राष्ट्रपति मुर्मू जी, आप सही नहीं हैं। हम सब अपने राष्ट्र के पुनरुत्थान के एक नये काल–चक्र के शुभारम्भ के साक्षी हर्गिज नहीं बन रहे हैं। फिलहाल तो हम धर्मनिरपेक्ष भारत के पीछे हिंदू राज में खिसकने के ही साक्षी बन रहे हैं। हां! देश की जनता ही अगर पहले ही मौके पर इस काल चक्र को पलट दे तो बात दूसरी है।

भाजपा ने बनाया राम मंदिर को राजनीतिक मुद्दा

के रवीन्द्रन

1996 के बाद से प्रत्येक भाजपा घोषणापत्र में, अयोध्या में एक भव्य राम मंदिर के निर्माण का वादा किया गया था। इसलिए यह उम्मीद करना नादानी होगी कि पार्टी 22 जनवरी को भव्यता वाले बिल्कुल नये राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा का राजनीतिक लाभ नहीं उठायेगी, खासकर उस समय जब कुछ ही महीने दूर अप्रैल–मई 2024 में महत्वपूर्ण संसदीय चुनाव होंगे। इसके बारे में कोई कुछ नहीं कर सकता है और यह विपक्षी दलों के सामने आने वाली दुविधा को अच्छी तरह से समझाता है। अयोध्या में जन्मस्थान पर भव्य श्री राम मंदिरश का पहला संदर्भ 1996 में पार्टी के घोषणापत्र में किया गया था, जिसमें भारत माता को श्रद्धांजलि के रूप में मंदिर के निर्माण की सुविधा देने का वायदा किया गया था। श्यह सपना हमारे देश के लाखों लोगों को प्रेरित करता है– घोषणापत्र में कहा गया यह जोड़ते हुए कि राम की अवधारणा उनकी चेतना के मूल में है। 1998 में, पार्टी ने यह वायदा दोहराते हुए घोषणा की कि पार्टी मंदिर के निर्माण की सुविधा के लिए सभी सहमतिपूर्ण, कानूनी और संवैधानिक तरीकों का पता लगायेगी, और इस बात पर बल देकर कहा गया कि श्रीराम भारतीय चेतना के मूल में हैं। हालांकि, कुछ अजीब कारणों से, 1999 में जारी एनडीए घोषणापत्र में अयोध्या मुद्दे का कोई संदर्भ नहीं था। 2004 के घोषणापत्र ने मंदिर निर्माण के लिए पार्टी की प्रतिबद्धता की पुष्टि की गई और इस बात पर जोर दिया गया कि कैसे राम भारत के एक प्रेरणादायक सांस्कृतिक प्रतीक हैं और अयोध्या करोड़ों हिंदुओं की धार्मिक भावनाओं से जुड़ा है।

2009 में, भाजपा ने मंदिर के निर्माण को सुविधाजनक बनाने के लिए बातचीत और न्यायिक कार्रवाई सहित सभी संभावनाओं का पता लगाने का फिर वायदा किया था और कहा था कि रामजी के जन्म स्थान पर एक भव्य मंदिर बनाने के लिए भारत और विदेशों में लोगों की जबरदस्त इच्छा है। अयोध्या में श्री राम के मंदिर के बारे में 2014 और 2019 के घोषणापत्रों में भी यही बातें कही गई थीं, लेकिन उस समय तक ऐसे संकेत मिल चुके थे कि राम मंदिर का मुद्दा राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्रों में अभूतपूर्व रूप से तूल पकड़ रहा है।

भाजपा की तरह, भारत का हर राजनीतिक दल इस तथ्य से अवगत है कि राम भारतीय मानस और संस्कृति में गहराई से बसे हुए हैं और उन्होंने इसका उपयोग राजनीतिक पूंजी बनाने के लिए करने की कोशिश की है। प्रधानमंत्री के रूप में दिवंगत पी वीनरसिम्हा राव को अयोध्या में बाबरी मस्जिद के विवादास्पद विध्वंस के बाद राम मंदिर के निर्माण का समर्थन करने के लिए जाना जाता है। राव ने मंदिर के निर्माण के लिए संतों के एक पैनल, तथाकथित रामालयम ट्रस्ट के गठन की पहल की थी। उन्होंने ट्रस्ट की परिकल्पना की थी कि इसमें पुरी, श्रृंगेरी, कांची, द्वारका और बद्रीनाथ के शंकराचार्य, रामानुजाचार्य संप्रदाय के अनुयायी तमिलनाडु और आंध्र के जीयर, उत्तर के श्री वैष्णव संत, द्वैत संप्रदाय के उडुपी और उत्तरादिमठ के संत, वल्लभाचार्य सम्प्रदाय के गुरुजी आदि शामिल होंगे। गौड़ीय और श्री चौतन्य परंपरा और अयोध्या के हनुमान गढ़ी और लक्ष्मण गढ़ी के महंत भी उसमें शामिल होंगे। लेकिन यह योजना असामयिक रूप से समाप्त हो गई क्योंकि राव चुनाव के बाद सत्ता में वापस आने में विफल रहे। यह भी ध्यान देने योग्य है कि राम मंदिर का शिलान्यास, हालांकि आरएसएस और भाजपा तत्वों द्वारा किया गया था, जब राजीव गांधी प्रधानमंत्री थे। इससे पहले राजीव गांधी की सरकार ने 1985 में बाबरी मस्जिद के ताले खोलने का फैसला किया था, इस फैसले से कांग्रेस पार्टी की भूमिका और इरादों को लेकर बड़ा विवाद हुआ था। जाहिर है, भाजपा इस बात से भली–भांति परिचित है कि राम भारतीय संस्कृति में गहराई से रचे–बसे हैं और इसलिए वह प्रतिष्ठा समारोह से मिले इस अनूठे अवसर को हाथ से जाने नहीं देना चाहती। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस आयोजन को लेकर जिस तरह से रुख अपनाया है, उससे इसके धार्मिक और राजनीतिक पहलुओं के बीच अंतर करना बेहद मुश्किल हो गया है। स्थिति की जटिलता ने विपक्षी दलों के पास कोई आसान विकल्प नहीं छोड़ा है। वे राम मंदिर को अस्वीकार नहीं कर सकते क्योंकि यह एक धार्मिक मुद्दे से कहीं अधिक है, और साथ ही वे इसके अभिषेक से जुड़े हुए नहीं दिखना चाहते हैं, जिसका मतलब होगा भाजपा को सारी महिमा और राजनीतिक पूंजी एक थाली में सजाकर पेश करना। यह कांग्रेस सहित प्रमुख विपक्षी दलों के सामने आने वाली वास्तविक दुविधा को स्पष्ट करता है। इसलिए, हर नेता इस बात पर जोर दे रहा है कि राम सबके हैं और भाजपा के पास कोई पेटेंट या स्वामित्व नहीं है। इसलिए, वे इस अवसर पर या तो अन्य मंदिरों का दौरा करके या वास्तव में कार्यक्रम होने के बाद नये मंदिर की यात्रा की योजना की घोषणा करके राम मंदिर के साथ–साथ भगवान राम के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त करने के तरीकों की खोज कर तैयारी कर रहे हैं।

क्या वाकई रामराज्य आएगा

22 जनवरी 2024 को भाजपा की राजनैतिक रणनीति के तहत, तय वक्त पर अयोध्या में बने करोड़ों के भव्य राम मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मुख्य यजमान के तौर पर शामिल हुए। उनके अलावा प्राण–प्रतिष्ठा के अनुष्ठान के दौरान गर्भगृह में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत, उत्तरप्रदेश की राज्यपाल आनंदी बेन पटेल और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शेष यजमानों के साथ मौजूद रहे। कांग्रेस ने जब इस कार्यक्रम को भाजपा और संघ का राजनैतिक आयोजन बताया था, तो मल्लिकार्जुन खड़गे, सोनिया गांधी और राहुल गांधी पर कई तरह के शाब्दिक हमले किए गए। उन्हें हिंदू विरोधी कहा गया। लेकिन अयोध्या में हुए कार्यक्रम को अगर खुले दिल–दिमाग से देखा जाए और उसका विश्लेषण किया जाए, तो यही नजर आएगा कि एक धार्मिक आयोजन को भाजपा का शक्तिप्रदर्शन बना दिया गया। पूंजी के दम पर धर्म के नाम पर जितना दिखावा किया जा सकता था, सब किया गया। देश के हजारों रिहायशी इलाके एक जैसे भगवा झंडों और फूल मालाओं से सजाए गए, जगह–जगह शोभायात्राएं, हवन, भंडारे आयोजित हुए। श्री मोदी ने 22 जनवरी को दीपावली मनाने का आह्वान किया, तो आंख मूंदकर लोगों ने सुबह से दीए जलाने, पटाखे फोड़ने शुरु कर दिए, बिना यह सोचे–विचारे कि राम रावण को मार कर सीताजी के साथ जब अयोध्या लौटे थे, तब दीपावली मनाई गई थी। लेकिन अब मोदीजी के काल में शायद नए भारतीय कैलेंडर के साथ नए तरीके से दीपावली मनाने का कोई चलन शुरु हो जाए। वैसे भी अयोध्या में दिए अपने भाषण में श्री मोदी ने कहा ही है कि 22 जनवरी कैलेंडर पर लिखी एक तारीख नहीं है, यह एक नए कालचक्र का उद्‌गम है। वाकई एक नया कालचक्र भारत की धार्मिक और राजनैतिक परंपराओं में शुरु हुआ है। धार्मिक परंपरा के मुताबिक गृहस्थ यानी पति और पत्नी दोनों मिलकर अनुष्ठान करते हैं। लेकिन श्री मोदी प्राण प्रतिष्ठा में अकेले शामिल हुए। भक्तों की सुविधा के लिए बताया गया कि प्रधानमंत्री प्रतीकात्मक जजमान रहेंगे, लेकिन आज के दौर में प्रतीक ही प्रधान बन गए हैं। लिहाजा वे 14 दंपती जो बतौर यजमान इस आयोजन में बैठे थे, वे खबरों में नजर नहीं आए, उनकी जगह प्रधानमंत्री मोदी दिखे। राजनैतिक परंपरा के मुताबिक संवैधानिक पद पर बैठे व्यक्ति को निज आस्था का सार्वजनिक प्रदर्शन नहीं करना चाहिए। लेकिन प्रधानमंत्री, उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री और राज्यपाल सभी बेधड़क एक हिंदू कार्यक्रम में, हिंदू राष्ट्र के पैरोकार संघ प्रमुख मोहन भागवत के साथ शामिल हुए। आदित्यनाथ योगी ने इस अवसर पर अपनी खुशी जाहिर करते हुए इसे त्रेतायुग की ओर लौटना बताया। वहीं मोहन भागवत ने इसे भारत का स्व लौटना बताया है। अब सवाल यह है कि अगर भाजपा और संघ का यह राजनैतिक आयोजन नहीं था तो फिर इस कार्यक्रम में संघप्रमुख और भाजपा नेताओं के भाषण क्यों हुए। क्यों इस कार्यक्रम में हिंदू धर्म की पहचान बताने वाले शंकराचार्य अनुपस्थित रहे। रामलला के नाम पर हुए इस कार्यक्रम में फिल्मी सितारों और कारोबारी बाबाओं को विशिष्ट मेहमानों की तरह क्यों बुलाया गया। क्या उनकी आस्था देश के करोड़ों हिंदुओं की आस्था से अधिक है, या फिर देश में अब ऐसा राम राज्य आएगा, जहां बलवान को ही भक्ति का अधिकार मिलेगा। अपने भाषण में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि त्याग और तपस्या के बाद हमारे राम आ गए हैं। इस वाक्य में अगर वे त्रासदी शब्द भी जोड़ते तो बात पूरी होती, क्योंकि इतिहास को चाहे जितनी तरह से लिख लिया जाए, यह तथ्य अपनी जगह कायम रहेगा कि राजनैतिक फायदे के लिए खड़े किए राम मंदिर आंदोलन से देश एक ऐसी त्रासदी का शिकार हुआ था, जिसने संविधान की मर्यादा को तार–तार करके रख दिया था। हजारों जिंदगियां राम मंदिर आंदोलन के कारण बर्बाद हुईं और बर्बादी हिंदू या मुसलमान का ठप्पा लेकर नहीं चलती, केवल उजाड़ती है। श्री मोदी ने इस मौके पर भारत की न्यायपालिका का आभार भी व्यक्त किया, जिसने न्याय की लाज रख ली।लेकिन क्या प्रधानमंत्री को यह याद है कि न्यायपालिका ने यह भी कहा था कि बाबरी मस्जिद को तोड़ना गलत था। क्या न्याय की लाज रखने के लिए श्री मोदी बाबरी तोड़ने वालों को दंड दिलाने की कोशिश करेंगे। राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के मौके को राष्ट्रवाद में भुनाने की कोशिश भी प्रधानमंत्री ने की, जब उन्होंने अपने भाषण में कहा कि गुलामी की मानसिकता को तोड़कर राष्ट्र उठ खड़ा हुआ है, ये समय सामान्य नहीं है। राम मंदिर बन जाने का गुलामी या आजादी से क्या संबंध है, इसे श्री मोदी को थोड़ा और स्पष्ट करना चाहिए। क्योंकि बाबरी मस्जिद न अंग्रेजों के शासन में बनाई गई और न उसे अंग्रेजी शासन में तोड़ा गया। और भारत अंग्रेजों को छोड़ किसी और का गुलाम नहीं रहा, तो फिर गुलामी की मानसिकता 22 जनवरी को कैसे टूट सकती है। मानसिकता वैसे भी एक अमूर्त चीज है, जो कभी भी बदल सकती है। जहां तक सवाल गुलामी का है, तो उससे 15 अगस्त 1947 को देश को आजादी मिल गई थी और 26 जनवरी 1950 को संविधान को स्वीकार करके भारत लोकतंत्र की राह पर आगे बढ़ गया था। इसलिए इन दो दिनों और इनके साथ गांधी जयंती को राष्ट्रीय पर्वों के तौर पर मनाया जाता है। आश्चर्य नहीं होगा अगर भाजपा तीसरी बार सत्ता में आई तो अगले बरस से 22 जनवरी भी राष्ट्रीय पर्व घोषित कर दिया जाए। बहरहाल, 22 जनवरी के बाद अब देश के सामने सबसे महत्वपूर्ण सवाल यही है कि 23 जनवरी से देश का माहौल कैसा होगा। क्योंकि भाजपा की लाख कोशिशों के बावजूद यह बात छिप नहीं पाई है कि आधे–अधूरे मंदिर में श्री मोदी के हाथों प्राण प्रतिष्ठा कराए जाने के पीछे मकसद राजनैतिक लाभ लेना है। इसलिए सरकार की ओर झुके मीडिया ने अपने अखंड कवरेज में बताया कि देश राममय है। लेकिन पूर्वोत्तर में यह माहौल नजर नहीं आया। राहुल गांधी की न्याय यात्रा में असम में लगातार बाधाएं डाली गईं और 22 जनवरी को उन्हें श्री शंकरदेव के मंदिर में प्रवेश करने से बलपूर्वक रोका गया, जिसके बाद श्री गांधी को धरने पर बैठना पड़ा। राहुल गांधी की यात्रा में बाधा खड़ी करने की कोशिशें यह जाहिर कर रही हैं कि भाजपा को राम मंदिर बनाकर भी निश्चिंतता नहीं मिल रही है कि उसे जीत मिल जाएगी। अपने भविष्य को लेकर ऐसी ही अनिश्चिंतताएं अब देश के आम लोगों के सामने भी हैं। भाजपा दावा कर रही है कि अब राम राज्य आ गया है। लेकिन क्या यह गांधी के द्वारा परिभाषित रामराज्य है। 1929 में महात्मा गांधी ने हिन्द स्वराज में लिखा था– राम राज्य से मेरा आशय हिन्दू–राज्य नहीं है। मेरा आश दैवी राज, ईश्वर की सत्ता से है।

बढ़ती भीड़ को देखते हुए अब 15 घंटे होंगे रामलला के दर्शन

सुरक्षा को लेकर रैपिड एक्शन फोर्स सहित अन्य जवान तैनात भारी संख्या में तैनात किये गये है।

(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या)

अयोध्या।अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के बाद मंगलवार की तरह बुधवार को भी भोर से राम लला की झलक पाने के लिए श्रद्धालुओं की भीड़ भारी संख्या में दिखाई दे रही थी। सुरक्षा की दृष्टि से रैपिड एक्शन फोर्स के जवान के साथ साथ भारी संख्या में सुरक्षा कर्मियों को तैनात किया गया था। बताते चलें कि बुधवार का दिन भी मंगलवार की तरह भक्तों की भारी भीड़ बेकाबू होने के बाद आज सख्त पहरा है। आरएएफ के जवान मंदिर के बाहर लगे हुए हैं। अनाउंसमेंट करके भक्तों की भीड़ को मैनेज किया जा रहा है।इधर, बुधवार को रामलला के श्रृंगार की तस्वीर सामने आई है। इसमें रामलला हरे वस्त्र में सोने का मुकुट पहनकर दर्शन दे रहे हैं। भक्तों की भीड़ को देखते हुए आज से रामलला 15 घंटे दर्शन देंगे। सुबह 7 बजे से रात 10 बजे तक। दोपहर 12 बजे केवल भगवान को भोग और आरती के लिए मंदिर के पट 15 मिनट के लिए बंद होंगे। बताते चलें कि मंगलवार को भारी भीड़ के बाद अंदर बैरिकेडिंग कर दी गई है। ताकि भक्त लाइन में अंदर जाए। सुरक्षा से जुड़े एक अधिकारी ने बताया कि मंदिर के बाहर आज लाइन लगी हुई है। मंगलवार को जो अफरा–तफरी जैसा माहौल था। वह अब नहीं है। ग्रुप बनाकर भक्तों को गर्भगृह में भेजा जा रहा है।सीएम योगी के सख्त निर्देश के बाद चेकिंग के बाद श्रद्धालुओं को रामजन्मभूमि पथ पर प्रवेश मिल रहा है। भीड़ नियंत्रण के लिए पुलिस ने मंगलवार रात में ही स्टील की मजबूत रेलिंग लगा दी है।

तुलसी जन्मभूमि राजापुर गोंडा में मीडिया ने किया सर्वेक्षण

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय

गोण्डा। डॉ स्वामी भगवदाचार्य जी महाराज ने बताया कि गोस्वामी तुलसीदास जी की जन्मभूमि राजापुर सूकरखेत गोंडा में मीडिया के लोगों ने जन्मभूमि का विधिवत सर्वेक्षण किया। तुलसी जन्मभूमि, तुलसी मानस सरोवर, तुलसी ओपेन थिएटर, तुलसी वाटिका, तुलसी कूप, तुलसी भवन, तुलसी तलैया, तुलसी घाट और गोस्वामी तुलसीदास के पिता आत्माराम दुबे के नाम 45 वीघा आत्माराम टेपरा तुलसी वन के सम्बन्ध में भी अंकुर सिंह एवं राजन सिंह ने जानकारी लेते हुए कैमरे से सचित्र दृश्य लिए। उन्हें श्री तुलसी जन्मभूमि न्यास के कार्यों से अवगत कराया गया। तुलसी जन्मभूमि के सम्बन्ध में बताया गया कि एटा सोरो अप्रामाणिक हो चुका है तथा राजापुर बांदा भी तुलसी जन्मभूमि नहीं है राजापुर का पहले नाम विक्रमपुर था। वहाँ सूकरखेत नहीं है अवधी भाषा नहीं है। गोंडा के राजा पुर में सूकरखेत, अवधी भाषा, तुलसी का आत्मकथ्य राजा मे रे राजा राम अवध शहर है तथा तुलसी तिहारो घर जायो है के आध ार पर तुलसी जन्मभूमि राजापुर सूकरखेत गोंडा प्रामाणिक सिद्ध हो चुका है। पास में स्थित है तुलसी ननिहाल हुलसीधाम भिलौराबासू बहराइच । इस अवसर पर अशोक सिंह, सांवल प्रसाद चौधरी, विवेक गुप्ता तथा शिवपाल ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

बाला साहब ठाकरे की जयंती पर सीएम योगी समेत कई नेताओं ने दी श्रद्धांजलि

संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ समेत कई प्रमुख नेताओं ने मंगलवार को शिवसेना के संस्थापक बाला साहब ठाकरे को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की। योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार को सोशल मीडिया मंच 'एक्स पर पोस्ट किए गए अपने श्रद्धांजलि संदेश में कहा, ''राष्ट्रवाद के ओजस्वी स्वर, कुशल संगठनकर्ता, शिवसेना के संस्थापक आदरणीय बाला साहब ठाकरे की जयंती पर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि! प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने 'एक्स पर अपने संदेश में कहा, ''कुशल राजनेता, प्रखर हिन्दू राष्ट्रवादी एवं शिवसेना के संस्थापक बाल ठाकरे 'बाला साहब की जयंती पर उन्हें कोटि–कोटि नमन।

राम मंदिर के लिए किसी ने खोई आंख,तो कोई हुआ अमर वही कारसेवक अखंड प्रताप के कंधे में आज भी फंसी है गोली

संवाददाता

अयोध्या। राम जन्मभूमि परिसर में मंदिर निर्माण को लेकर किसी की आंख चली गई तो रामभक्त शहीद हो गए जबकि एक ऐसे उस समय के कारसेवक गवाह है जिनके कंधों मे आज भी गोली फंसी हुई है।बताते चलें कि रामअचल गुप्त, मंदिर आंदोलन का एक ऐसा नाम,जिसने मात्र 26 वर्ष की आयु में ही कारसेवा के दौरान अपने प्राणों की आहुति देकर अमरत्व प्राप्त कर लिया। वही कोतवाली नगर क्षेत्र के उनकी तरह ही महाजनी टोला निवासी सुधीर नाग सिद्धू ने कारसेवा में अपनी आंख खो दी।

जबकि रुदौली तहसील के शुजागंज निवासी रामअचल गुप्त के साथ ही इस गांव का राम मंदिर आंदोलन से अटूट रिश्ता बन गया।कारसेवा के उत्साह का भाव इसी से होता है कि मात्र 26 वर्ष के रामअचल गुप्ता दो दर्जन राम भक्तों के साथ 30 अक्टूबर 1990 को रामनगरी पहुंचे थे। दो नवंबर को वह पुलिस की गोली का शिकार हो गए।इस घटना के साक्षी रहे नगर के प्रहलाद गुप्ता बताते हैं कि तब रुदौली तहसील बाराबंकी में थी।बाराबंकी के डीएम की अनुमति लेने के बाद ही उनका शव मिल पाया था। तीन दिन बाद जब शव शुजागंज पहुंचा तो पूरे इलाके में शोक की लहर छा गई। पक्का तालाब शिव मंदिर के बगल रामअचल की समाधि बनी है।वर्ष 2021 में विधायक रामचंद्र यादव ने बलिदानी रामअचल गुप्त की मूर्ति लगवाई।महाजनी टोला निवासी सुधीर नाग सिद्धू उस वक्त करीब 20 वर्ष के रहे होंगे, जब 30 अक्टूबर 1990 को कारसेवा के दौरान उन्हें गोली लगी थी। वह हिंदू जागरण मंच के रिकाबगंज वार्ड के संयोजक थे।संगठन का निर्देश आया कि कारसेवा करिये।वह साथियों संग अमावां मंदिर तक पहुंच गए। 'जय श्री राम' का नारा लगाते वह रामजन्मभूमि की ओर बढ़ने लगे। इसी बीच पुलिस ने फायरिंग कर दी। गोली उनके दाएं जबड़े में फंस गई।साथियों ने उन्हें पहले श्रीराम चिकित्सालय पहुंचाया और उसके बाद जिला चिकित्सालय ले गए, जहां उपचार के बाद उन्होंने लखनऊ रेफर कर दिया गया। उनकी दाईं आंख की रोशनी लगभग समाप्त हो चुकी है।पूराबाजार के नारा गांव निवासी अखंड प्रताप सिंह भी उन लोगों में सम्मिलित हैं, जिन्हें पुलिस की गोली खानी पड़ी थी। अब 76 वर्ष के हो चुके हैं, लेकिन दो नवंबर 1990 को उनके कंधे में लगी गोली आज तक नहीं निकल सकी है। चिकित्सकों ने गोली निकालने पर उनके लकवाग्रस्त होने की आशंका व्यक्त की, जिसके बाद उनका उपचार तो हुआ, लेकिन गोली कंधे में आज भी फंसी हुई है।अखंड प्रताप सिंह ने आठ घायल कारसेवकों को साथियों संग अस्पताल पहुंचाया था। इसके बाद वह अन्य कारसेवकों को अस्पताल पहुंचाने के लिए दोबारा लाल कोठी के निकट पहुंचे थे। पुलिस ने फिर से फायरिंग आरंभ कर दी और गोली उनके दाहिने कंधे में धंस गई।साथी उन्हें श्रीराम अस्पताल ले गए, जहां से उन्हें मेडिकल कालेज लखनऊ रेफर कर दिया गया। अखंड प्रताप सिंह बाल्यावस्था से ही राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से जुड़े रहे हैं। वह कहते हैं,यज्ञ रूपी मंदिर आंदोलन की पूर्णाहुति 22 जनवरी को होगी। इससे अच्छा दिन और कोई नहीं हो सकता।

22 जनवरी 2024, इस ऐतिहासिक पावन दिवस के साक्षी बनने जा रहे हैं

मृत्युंजय प्रताप सिंह पत्रकार

राजधानी लखनऊ । प्रभु श्री राम के अयोध्या स्थित मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के पावन दिवस पर विजयनगर के पंचायत घर में धानुक समाज द्वारा सुंदरकांड, दीपोत्सव , भजन कीर्तन एवं भव्य भंडारे का आयोजन किया गया। सबने मिलकर प्रभु श्री राम के जीवन का गुणगान किया । उनके पगचिन्हो पर चलने का आह्वान किया व भव्य मंदिर के निर्माण को एक ऐतिहासिक दिन बताया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सुरेश चंद तिवारी पूर्व विधायक , राजू गांधी पार्षद, पम्मी पार्षद एवं आशीष हितेषी पार्षद मुख्य रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम में उपस्थित लोगों ने अपने–अपने विचार रखें और बताया कि इस दिन को देखने के लिए कई सदियां बीत गई ,कई पीढियों ने अपना बलिदान दिया। आज हम सब के लिए यह गौरव का पल है कि हम सब 22 जनवरी 2024 इस ऐतिहासिक दिन के साक्षी बनने जा रहे हैं।

सभी शराब की दुकान गणतन्त्र दिवस पर रहेगी बन्द : जिला आबकारी अधिकारी

ब्यूरो प्रमुख

विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर । जिला आबकारी अधिकारी उमेश चन्द्र पाण्डेय ने अवगत कराया है संयुक्त प्राप्त आबकारी अधिनियम 1910 में दिए गये प्राविधानों के क्रम अनुज्ञापन की शर्तों में उल्लिखित है कि 26 जनवरी, (गणतन्त्र दिवस) के अवसर पर समस्त आबकारी अनुज्ञापनों को बन्द रखा जाए। उक्त के अनुपालन में आप समस्त अनुज्ञापियों को निर्देशित किया जाता है कि विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी 26 जनवरी 2024 (गणतन्त्र दिवस) के पावन अवसर पर समस्त देशी शराब, विदेशी मदिरा, बियर, भाँग, ताड़ी की दुकानों एवं सी0एल02, एफ0एल02ध्2बी, माण्डलशाप तथा समिश्रबार के अनुज्ञापनों को बन्द रखना सुनिश्चित करें। उक्त बन्दी हेतु नियमानुसार कोई प्रतिफल देय नही होगा।

गणतंत्र दिवस के अवसर पर अपने घरों, स्कूलों और कार्यालयों में फहराएं तिरंगा

संवाददाता

लखनऊ,। राष्ट्रीय समाज कार्य कर्ता संगठन के संयोजक मुहम्मद आफक ने अपने बयान में गणतंत्र दिवस का जिक्र करते हुए कहा कि हर साल 26 जनवरी को पूरे देश में गणतंत्र दिवस के रूप में हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है. और 15 अगस्त 1947 की तरह. यह तिथि देश का राष्ट्रीय और स्मारक दिवस भी बन गई है। 26 जनवरी को एक उत्सव के रूप में मनाया जाता है। इस दिन के लिए हमारे बुजुर्गों ने महान बलिदान दिए और लाखों लोगों ने अपनी जान कुर्बान कर दी। मुहम्मद अफाक ने लोगों से बिना किसी धर्म के भेदभाव के अपने घरों, शैक्षणिक संस्थानों और कार्यालयों में तिरंगा फहराने की अपील की और अपने बच्चों को गणतंत्र दिवस के बारे में जानकारी देने को कहा. उन्होंने कहा कि अगर उस समय हमारे देश के लोग धर्म के नाम पर लड़ते तो हमें यह दिन नसीब नहीं होता। उनहों ने इस देश को अंग्रेजों से आजाद कराया। 26 जनवरी 1950 को हमारा देश भारत एक लोकतंत्र बन गया यानि हमारे देश में हमारे लोगों पर अपना ही कानून लागू हुआ।

प्राण प्रतिष्ठा पर डीआईजी माघ मेला ने अपने अधीनस्थ कर्मियों के साथ रामलला की पूजन अर्चना

अयोध्या। प्रभु श्री राम के नूतन विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर माघ मेला प्रयागराज का संगम तट पूरी तरह से राममय हो गया।चारों ओर जय श्री राम की गूंज सुनाई दे रही थी।

कलाकारों द्वारा रंगोली से उकेरे गए राम मंदिर के प्रतिरूप की प्रशंसा वहां उपस्थित बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने की तथा आयोजित भजन संध्या में भाग लिया।पुलिस उप महानिरीक्षक डॉ राजीव नारायण मिश्र ने प्रभु श्री राम की आरती किया।बड़ी संख्या में राम भक्तों एवं पुलिसकर्मियों ने दीपक प्रज्वलित किया किया तथा इस उत्सव में प्रतिभाग किया। उत्सव के अंत में उपस्थित सभी राम भक्तो को प्रसाद भी वितरण किया गया।

शालिनी सिंह बिहार लोक सेवा आयोग द्वारा घोषित प्रवक्ता के परिणाम में 687वी रैंक हासिल कर किया नाम रोशन

अयोध्या। इरादे मजबूत हों और मन में कुछ कर गुजरने की तमन्ना हो तो कोई भी मंजिल मुश्किल नहीं है ऐसा ही कर दिखाया है।अयोध्या जिले के गोसाईगंज विधानसभा के हैदरगंज क्षेत्र की धमहर गांव की प्रतिभावान होनहार बेटी शालिनी सिंह पुत्री इंद्र प्रताप सिंह ने बिहार लोक सेवा आयोग द्वारा घोषित प्रवक्ता के परिणाम में 687वी रैंक हासिल की है। क्षेत्र के लोग इस उपलब्धि पर गौरवान्वित है और शालिनी सिंह एवं उनके परिजनों को हार्दिक बधाई और आगे की तरक्की के लिए प्रभु श्री रामजी से कामना कर उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दे रहे है। इससे पहले ये प्राइमरी में टीचर थी।हमें अपने बेटियों पर गर्व है। उनकी उल्लेखनीय उपलब्धियों से विश्व में भारत का सम्मान बढ़ा है।बेटियों को जितने अधिक अवसर मिलेंगे, वे अपने असीमित सामर्थ्य से देश और समाज के प्रति उतना अधिक योगदान देंगी। हमें विश्वास है कि विकसित भारत की संकल्प की सिद्धि हमारे युवा ही करेंगे।

सनातन महोत्सव धर्म संसद का आयोजन लक्ष्मण मेला मैदान में आज से

संवाददाता

लखनऊ। सनातन महासभा द्वारा 24 जनवरी से 28 जनवरी तक श्री राम सनातन महोत्सव (धर्म संसद) का आयोजन लक्ष्मण मेला मैदान में किया जाएगा। महोत्सव को लेकर विस्तृत जानकारी देते हुए मंगलवार को कार्यक्रम स्थल पर आयोजित प्रेसवार्ता के दौरान धर्म संसद के प्रभारी देवेन्द्र शुक्ल जी ने बताया कि महोत्सव की तैयारी लगभग पूरी हो चुकी है उन्होंने बताया कि महोत्सव के दौरान पूज्य शंकराचार्य (बद्रिकाश्रम), कामदगिरि पीठाधीश्वर जगद्गुरु रामस्वरूपाचार्य जी महाराज, अन्तर्राष्ट्रीय कथावाचक तथा सनातन धर्म के पुरोधा ठाकुर देवकीनंदन, इस्कान मन्दिर लखनऊ के अध्यक्ष पूज्य अपरिमेय श्यामदास जी महाराज सहित अयोध्या, काशी, हरिद्वार मथुरा, वृंदावन, नैमिषारण्य, चित्रकूट एवं अन्य प्रांतों के संत–महंत उपस्थित रहेंगे। कार्यक्रम संयोजक डा. प्रवीण ने बताया कि सनातन महोत्सव में सभी के लिए स्वास्थ्य

मेला, रोजगार मेला, जनसमाधान शिविर, खादी ग्रामोउद्योग, आयुष विभाग, बैंक आदि के शिविर होंगे। स्वास्थ्य मेला में देहदानध्अंगदानध् रक्तदान शिविर, जांच शिविर, कैंसर, हृदय, शुगर, न्यूरो, मानसिक रोग आदि के डॉक्टर उपलब्ध रहेंगे। साथ में विभागीय शिविर जैसे बिजली, एलडीए, नगर निगम, पुलिस आदि के लिए प्रयास किया जा रहा है। रघुकुल शक्तिपीठध्रामानन्द फाउन्डेशन के पीठाधीश्वरध्अध्यक्ष आदरणीय आनन्द महाराज ने बताया कि धर्म संसद में बागेश्वर धाम के आदरणीय धीरेंद्र शास्त्री जी, पूज्य श्री राघवाचार्य जी महाराज, पूज्य श्री रसिक पीठाधीश्वर जन्मेजा शरण जी महाराज बड़ा स्थान जानकी घाट श्री धाम अयोध्या आदि देश के विभिन्न पीठों के साधु–सन्तों को भी आमंत्रित किया गया है। सह संयोजक रामकिशोर शुक्ल व शैलेन्द्र श्रीवास्तव,एड.बताया ने बताया कि कार्यक्रम में कुछ राजनेताओं के भी उपस्थित रहने की सम्भावना है। जिसमें माननीय रक्षामंत्री श्री राजनाथ सिंह जी, उपमुख्यमंत्री श्री बृजेश पाठक जी, जल संसाधन मंत्री श्री स्वतंत्र देव सिंह,,पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री श्री जयवीर सिंह जी, महिला व बाल पुष्टाहार मंत्री डॉ.प्रतिभा शुक्ल, श्री पंकज सिंह जी, श्री मुकेश शर्मा जी, श्री आनंद द्विवेदी जी, महापौर लखनऊ श्रीमती सुषमा खर्कवाल आदि प्रमुख हैं। सह संयोजक रवि कचरू ने प्रेसवार्ता को सम्बोधित करते हुए कहा कि लखनऊ में इस तरह का यह पहला कार्यक्रम है जिसमें 5 दिनों तक सनातन धर्म के विस्तार के लिए ध र्माचार्यों द्वारा विचार विमर्श करके प्रस्ताव पारित किए जाएंगे। महोत्सव की व्यवस्था देख रहे प्रमुख सोमेश सिंह व डा. विजय मिश्र ने महोत्सव में लगने वाले विभिन्न स्टालों के विषय में बताया कि बहुत ही कम मूल्य पर महोत्सव में स्टाल उपलब्ध कराये जा रहे हैं जिसमें भारतीय खान–पान, वेशभूषा को ही स्थान दिया जाएगा!

उत्तर प्रदेश गौरव सम्मान से नवाजी जाएंगे प्रदेश की प्रतिभाएं

लखनऊ से डॉ. ऋतु करिधल और कानपुर से नवीन तिवारी को मिलेगा सम्मान

संवाददाता

लखनऊ,। हर साल यूपी दिवस पर प्रदेश की प्रतिभाओं को उत्तर प्रदेश गौरव सम्मान से सम्मानित किया जाएगा। इसके तहत 11 लाख रुपए, स्मृति चिह्न, अंगवस्त्र और प्रमाण पत्र भेंट किया जाएगा। इस साल भी उत्तर प्रदेश के अलग अलग क्षेत्रों में उपलब्धि हासिल करने वाली प्रतिभाओं को श्उत्तर प्रदेश गौरव सम्मानश से नवाजा जाएगा। यूपी दिवस पर दिया यह सम्मान जाएगा। जिसमें लखनऊ की डॉक्टर ऋतु करिध ाल श्रीवास्तव और कानपुर के नवीन तिवारी को यह सम्मान दिया जाएगा। उत्तर प्रदेश गौरव सम्मान के लिए चयनित वैज्ञानिक डॉ. ऋतु करीधल श्रीवास्तव लखनऊ की रहने वाली हैं। उन्होंने भारत के मार्स से ऑर्बिटर मिशन, मंगलयान के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं। वह इस मिशन की उप संचालन निदेशक भी थीं। मंगलयान इसरो की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक था। इसने भारत को मंगल ग्रह पर पहुंचने वाला दुनिया का चौथा देश बना दिया था। डॉ. ऋतु करीध ाल ने लखनऊ विश्वविद्यालय से भौतिकी मेंअपनी बीएससी पूरी की। वह छह महीने तक लखनऊ विश्वविद्यालय में शोध छात्रा रही हैं। उन्हें वार्षिक दीक्षांत समारोह 2019 के दौरान लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा डीएससी की मानद उपाधि (मानद डॉक्टरेट्स) से सम्मानित किया गया है। करीधल 1997 से इसरो के लिए काम कर रही हैं। एयरोस्पेस इंजीनियरिंग में मास्टर डिग्री हासिल करने के लिए वह आईआईएससी, बैंगलोर में भी रही हैं।

दर्शकों को हंसा कर लोट पोट कर गया नाटक कंजूस

संवाददाता

लखनऊ,। भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय, संस्कृति विभाग नई दिल्ली के सहयोग से स्वर्ण संगीत एवं नाट्य समिति लखनऊ के तत्वावधान में आज से वाल्मिकी रंगशाला उ.प्र. संगीत नाटक अकादमी गोमती नगर में आरम्भ हुए तीन दिवसीय स्वर्ण संगीत नाट्य समारोह की प्रथम संध्या में आयोजक संस्था द्वारा मौलियर के मूल नाटक का हजरत आवारा के नाट्य रूपान्तरण एवं तरूण मुखर्जी के निर्देशन में नाटक कंजूस का मंचन किया गया। मंचन से पूर्व वरिष्ठ आईएएस अधिकारी प्रदीप कुमार यसेवानिवृत्त ने दीप प्रज्जवलित कर नाटक का शुभारम्भ किया। हास्य–परिहास्य की चाशनी से परिपूर्ण नाटक कंजूस ने ज्यादा लालच न करने की सलाह देते हुए पैसे के पीछे न भागने के लिए प्रेरित कर दर्शकों को हंसा–हंसा कर लोट पोट किया। नाट्य सारानुसार मिर्जा सखावत बेग जो कि बिधुर हैं, अपने बेटे फर्रूख तथा बेटी अजरा के साथ एक घर में रहते हैं। मिर्जा के घर में इन तीनों के अतिरिक्त घरेलू नौकर नासिर, कोचवान व बवर्ची अल्फू के साथ नम्बू नौकरी करते हैं। नासिर मिर्जा की बेटी अजरा से बेपनाह मोहब्बत करते हैं तथा मिर्जा का बेटा फरूख मरियम नाम की लड़की को चाहता है। मिर्जा स्वभाव से बहुत ही कन्जूस होने के साथ–साथ शक्की मिजाज का है। अपने ही घर के बगीचे की जमीन में दस हजार अशर्फियां दबाकर महफूज रखता है। मिर्जा को हमेशा इस बात का शक होता है कि उसके घर के नौकर कहीं उसकी रकम चुरा न ले। इधर फर्रूख और अजरा अपने–अपने मोहब्बत की दास्तान सुनाकर शादी की योजना बनाते हैं। इसी बीच मिर्जा वहाँ पहुँचकर अपनी शादी के बारे में फर्रूख और अजरा से राय पूछता है। लेकिन जब फर्रूख मियां को यह पता चलता है कि मिर्जा निकाह करना चाहता है तो फर्रूख मियां के पैरों तले जमीन खिसक जाती है। अन्ततः बाप–बेटे में एक लम्बी नोंक–झोंक के बीच मिर्जा को यह पता चलता है कि उसकी अशर्फियां चोरी हो गई है। कई विषम परिस्थितियों से गुजरता हुआ यह नाटक वहां पर एक नया मोड़ लेता है जहां असलम साहब का प्रवेश होता है। असलम के आने पर कई राज अपने–आप खुल जाते हैं कि नासिर और मरियम दोनों असलम साहब के खोये हुए बेटे–बेटी हैं जो एक समुन्दरी तूफान में बिछड़ जाते हैं। आखिरकार तीनों की शादियां हो जाती है और सारा खर्च असलम साहब खुद करते हैं। इसी के साथ इस हास्य नाटक का समापन हो जाता है। सशक्त कथानक से परिपूर्ण नाटक कंजूस में सौरभ सिंह, सुप्रिया कुशवाहा, मोहित यादव, अशोक लाल, तारिक इकबाल, अरूण कुमार विश्वकर्मा, अचला बोस, जारा हयात, शशांक तिवारी, कोमल प्रजापति और आनन्द प्रकाश शर्मा ने अपने दमदार अभिनय से दर्शकों को देर तक अपने आकर्षण के जाल में बांधे रखा। नाटक के पार्श्व पक्ष में प्रकाश–गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव, संगीत–दीपिका बोस, रूप सज्जा–विश्वास वैश्य और मंच परिकल्पना में स्निग्धा मुखर्जी का योगदान नाटक को सफल बनाने में महत्वपूर्ण साबित हुआ।

काइट फेस्टिवल 2024 पतंग प्रतियोगिता की हुई शुरुआत

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय

लखनऊ। आइडियल काइट फ्लाइंग एसोसिएशन द्वारा काइट फेस्टिवल 2024 पतंग प्रतियोगिता का शुभआरम्भ द्य इस पतंग प्रतियोगिता में लखनऊ की 64 टीमें भाग लेगी द्य इसका उद्घाटन अध्यक्ष भाषा विभाग उत्तर प्रदेश के श्री सय्यद तूरद जैदी व बीजीपी नेता सय्यद जाफर नकवी द्वारा किया गया । संस्था के चेयरमैन, श्री शाहआलम ने बताया हम इस प्रतियोगिता इस प्रतियोगिता में 64 टीमें हिस्सा ले रही है द्य हम विजेता टीम को 51000 व उपविजेता 25000 रुपए का नकद पुरस्कार दिया जाएगा द्य उन्होने बताया की हमारी संस्था चाइनीज मांझे का पुरजोर विरोध करती है । उद्घाटन समारोह में उस्ताद सरवत जमाल, उस्ताद नवाब आगा , राहुल तिवारी, फराज सिद्दीकी, आशू, सतीश, सदफ, सलीम, सलमान, बबलू, विकास दद्दा, आदिल, आदी शामिल आदि लोग भी उपस्थित थे।

शालीमार गेटवे मॉल में एंड ऑफ सीजन सेल, 70 फीसदी तक की बंपर छूट का ऑफर

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय

लखनऊ। शहर के पसंदीदा शॉपिंग डेस्टिनेशन शालीमार गेटवे मॉल ने अपनी बहुप्रतीक्षित एंड–ऑफ–सीजन सेल के शुभारंभ की घोषणा कर दी है। इस एंड ऑफ सीजन सेल में 70 फीसदी तक की बंपर छूट शामिल है। यह असाधारण सेल फैशन के प्रति उत्साही लोगों के लिए फैशन इंडस्ट्री के कुछ सबसे प्रसिद्ध ब्रांड्स की असाधारण डील्स के साथ अपने वार्डरोब को अपग्रेड करने का एक अनूठा अवसर दे रही है।

इस शानदार सेल के दौरान, शॉपर्स लाइफस्टाइल, रंगरीति, बीबा, जॉन प्लेयर, डीश्मोजा और रिलायंस स्मार्ट बाजार जैसे प्रतिष्ठित ब्रांड्स पर 50: तक की विशेष छूट का लाभ उठा सकते हैं। इसके अलावा, वे जिवामे और रिलायंस ट्रेंड्स, ट्रेंड्स फुटवियर पर 60: तक की बचत और पेलेस पर 70: की आश्चर्यजनक छूट का लाभ उठा सकते हैं। बोनस के रूप में, रिलायंस स्मार्ट बाजार एक बेहतरीन ऑफर दे रहा है, जिसमें दो की खरीद पर एक मुफ्त का ऑफर शामिल है। इस ऑफर से शॉपर्स को अधिक फायदे वाली शॉपिंग करने का आनंद मिलेगा।

एंड ऑफ सीजन सेल के बारे में बात करते हुए, शालीमार गेटवे मॉल के सीनियर जनरल मैनेजर, श्री सुशील कुमार आहूजा ने अपना उत्साह व्यक्त करते हुए कहा, ष्हम अपने सम्मानित शॉपर्स को सर्वोत्तम ब्रांड्स पर ये असाधारण छूट पेश करते हुए बेहद रोमांचित हैं। यह हमारा प्रयास है कि हम अपने शॉपर्स का आभार व्यक्त कर सकें, जिन्होंने हमें सहयोग देकर निरंतर हमारा उत्साह बढ़ाया है। शालीमार गेटवे मॉल अपने ग्राहकों को सर्वोत्तम ब्रांड्स ऑफर करने के लिए ऐसा शॉपिंग माहौल और जगह विकसित करने पर अपना ध्यान केंद्रित कर रहा है, जहां शॉपर्स आराम के साथ एंटरटेनमेंट और वर्ल्ड क्लास शॉपिंग एक्सपीरियंस एक छत के नीचे पा सकें। अपने शॉपर्स के अनुभव को और भी बेहतर बनाने के लिए, हम पूरे मॉल परिसर में उनके लिए मुफ्त वाईफाई कनेक्टिविटी की सुविधा प्रदान कर रहे हैं।

एंड इस सीजन की स्पेशल सेल शालीमार गेटवे मॉल की अपने ग्राहकों को बेजोड़ वैल्यू और रिटेल की एक विविध श्रृंखला की पेशकश करने की प्रतिबद्धता का उदाहरण है। खरीदार यहां लेटेस्ट फैशन ट्रेंड्स और अधिक से अधिक बचत के साथ खुशियों से भरी शॉपिंग का अनुभव की ले सकते हैं। मॉल के फूड कोर्ट में विभिन्न प्रकार के व्यंजन उपलब्ध हैं, इससे शॉपर्स के लिए शॉपिंग के दौरान स्वादिष्ट व्यंजनों का आनंद लेने की सुविधा भी मिलती है। अधिक जानकारी के लिए और इस असाधारण शॉपिंग फेस्टिवल में शामिल होने के लिए, शालीमार गेटवे मॉल पधारें और फूड कोर्ट में लजीज व्यंजनों के साथ रिटेल शॉपिंग का बेहतरीन अनुभव का लाभ उठाएं।

नेता जी की जयंती मनाई गई

सड़क सुरक्षा के प्रति बच्चों ने जागरूकता रैली निकाली

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय

लखनऊ। डी ग्रुप ऑफ कॉलेजेस के सभी विद्यालयों श्री अयोध्या सिंह मेमोरियल इंटर कॉलेज चिनहट लखनऊ, डीपीएस अकैडमी रायपुर राजा इटौंजा एवं जी. एस.एम. आईटीआई इटौंजा में नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती धूमधाम से मनाई गई। सभी विद्यालयों की प्रबंधक श्रीमती शैल सिंह ने डीपीएस अकैडमी में नेताजी को पुष्पांजलि दी। जी एस एम आईटीआई में देव ग्रुप ऑफ कॉलेजेस के अध्यक्ष श्री एल एम पी सिंह ने नेताजी को पुष्पांजलि देकर याद किया ।

श्री अयोध्या सिंह मेमोरियल इंटर कॉलेज में विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती पूजा सिंह ने नेता जी सुभाष चंद्र बोस जी को पुष्प अर्पित कर उनको नमन किया। प्रधानाचार्या श्रीमती पूजा सिंह ने सुभाष चंद्र बोस जी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए बच्चों को संबोधित किया। भारत की आजादी में उनका योगदान भुलाया नहीं जा सकता। इसके बाद प्रधानाचार्या , उप प्रधानाचार्या, समस्त शिक्षक एवम् छात्रों ने सड़क सुरक्षा शपथ ली। फिर कॉलेज के छात्रों ने सड़क सुरक्षा जागरूकता हेतु रैली निकाली एवम् मानव श्रंखला बना कर लोगों को जागरूक किया।बच्चों ने रैली के दौरान सड़क सुरक्षा संबंधी नारे भी लगाए। जागरूकता रैली विद्यालय से निकलकर चिनहट बाजार एवं चिनहट तिराहे से होते हुए वापस विद्यालय पहुंची।

पर्यटन से उत्तर प्रदेश को मिली आर्थिक मजबूती- डॉ. मनोज मिश्र

उत्तर प्रदेश स्थापना दिवस पर गोष्ठी का आयोजन

ब्यूरो प्रमुख

विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। उत्तर प्रदेश के स्थापना दिवस के अवसर पर वीर बहादुर सिंह विश्वविद्यालय के जनसंचार विभाग द्वारा बुधवार को प्रगति के पथ पर उत्तर प्रदेश विषयक गोष्ठी का आयोजन किया गया ।

गोष्ठी में बतौर मुख्य वक्ता जनसंचार विभाग के अध्यक्ष डॉ मनोज मिश्र ने कहा कि उत्तर प्रदेश सांस्कृतिक विविधताओं का प्रदेश है । अवध, बुंदेलखंड, काशी और बृज क्षेत्र ने पर्यटन की दिशा में एक नया आयाम स्थापित किया है । पर्यटन से भी अब उत्तर प्रदेश को आर्थिक मजबूती मिल रही है । भारत के विकास में उत्तर प्रदेश अपना योगदान दे रहा है । उन्होंने कहा कि अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण होने से इस क्षेत्र में रोजगार के व्यापक अवसर उपलब्ध हुए है । इसका प्रभाव अन्य जनपदों में भी देखने को मिलेगा ।

अध्यक्षीय संबोधन में अनुप्रयुक्त सामाजिक विज्ञान संकायाध्यक्ष प्रो अजय प्रताप सिंह ने कहा कि उत्तर प्रदेश ने गुणवत्ता और विकास में महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं । विभिन्न क्षेत्रों में अग्रणी योजनाएं और परियोजनाएं इसके विकास को सुदृढ़ कर रही हैं । उच्च शिक्षा, स्वास्थ्य, और आधुनिक बुनियादी सुविधाएं राज्य की जनता को लाभ पहुंचा रही हैं। उत्तर प्रदेश का विकास सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक दृष्टि से मजबूती से आगे बढ़ रहा है । कार्यक्रम का संचालन डॉ. दिग्विजय सिंह राठौर ने किया । इस अवसर पर डॉ. सुनील कुमार, डॉ. अवध बिहारी सिंह, डॉ मनोज कुमार पाण्डेय, डॉ चन्दन सिंह समेत विद्यार्थी उपस्थित रहे।

ग्रैंड परेड रिहर्सल का पुलिस अधीक्षक ने किया निरक्षण

ब्यूरो प्रमुख

विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर पुलिस लाइन्स ग्राउंड जौनपुर में गणतंत्र दिवस 2024 के अवसर पर जौनपुर पुलिस द्वारा आयोजित होने वाली परेड का किया

गया ग्रैंड रिहर्सल। पुलिस अधीक्षक जौनपुर, डा0 अजय पाल शर्मा द्वारा कार्यक्रम की तैयारियों का निरीक्षण कर परेड को बेहतर एवं आकर्षक बनाने के लिए संबंधित को दिए आवश्यक दिशा–निर्देश।

राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा रोकने पर कांग्रेस नेता सड़क पर उतरे

संवाददाता

लखनऊ,। राजधानी लखनऊ समेत उत्तर प्रदेश में कांग्रेस के कार्यकर्ता सड़क पर उतर गए। असम में राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा रोके जाने के बाद कांग्रेस के कार्यकर्ता आक्रोशित हो गए। उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के द्वारा लखनऊ समेत प्रदेश के सभी जिलो में विरोध प्रदर्शन धरना शुरू हुआ है। लखनऊ के परिवर्तन चौराहे से विधानसभा की तरफ कूच कर रहे सैकड़ो की संख्या में कार्यकर्ताओं को पुलिस ने उठाकर बस में भरकर हटाया। अमेठी और रायबरेली में भी कांग्रेस की कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन किया। लखनऊ के जिला अध्यक्ष वेद प्रकाश त्रिपाठी के नेतृत्व में परिवर्तन चौराहे से विधानसभा तक मार्च निकालने पहुंचे। पहले से मौजूद पुलिस ने परिवर्तन चौराहे से जैसे ही कांग्रेस कार्यकर्ता आगे बढ़े उन्हें रोक लिया। पुलिस के द्वारा रोके जाने के बाद कांग्रेस के कार्यकर्ता आक्रोशित हो गए। वह सड़क पर बैठकर नारेबाजी करने लगे। पुलिस और कांग्रेस के कार्यकर्ताओं के बीच हुई झड़क के बाद पुलिस ने जबरन कार्यकर्ताओं को उठाकर पुलिस की बस में भरकर उन्हें इको गार्डन ले जाकर छोड़ दिया।

अनीस मंसूरी ने कहा कि केंद्र सरकार का यह चुनावी स्टंट हैं

मृत्युंजय प्रताप सिंह पत्रकार

लखनऊ, पसमांदा मुस्लिम समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष पूर्व मंत्री अनीस मंसूरी ने कहा कि जननायक कर्पूरी ठाकुर के फार्मूले को केंद्र सरकार को लागू कर देना चाहिए था जबकि 2014 से अबतक आप सत्ता में हैं, अब 2024 लोक सभा चुनाव में लाभ लेने के लिए भारत रत्न देने की घोषणा की है यदि केंद्र सरकार को लगता हैं कि सम्मान देने में देरी हुई हैं तो अब तत्काल प्रभाव से कर्पूरी ठाकुर फार्मूला को देश भर में लागू कर पिछड़ों, श्रमिकों, मजदूरों, दलितों, पसमांदा समाज के वंचितों को आरक्षण का लाभ देगी तभी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

अनीस मंसूरी ने कहा कि केंद्र सरकार का यह चुनावी स्टंट हैं वरना सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न देने से पहले उनका फार्मूला लागू कर देना चाहिए यदि भारत रत्न देने से पहले कर्पूरी ठाकुर फार्मूला लागू कर देती और उसके बाद सम्मान देने की घोषणा करते तो भाजपा की साफ गोई नजर आती ऐसा न करके भाजपा ने सिर्फ वोट साधने की राजनीति की हैं।

अनीस मंसूरी ने कहा कि उनकी जाति, समुदाय की जन संख्या 1. 70 प्रतिशत हुआ करती थी वह सारी पिछड़ी जातियों को इकठ्ठा करने वाले पहले नेता थे, सियासत में पिछड़ी जातियों के लिये सीमित राजनैतिक स्थान था, मुख्यमंत्री काल में उन्होंने 1978 में बिहार में सरकारी सेवाओं में पिछड़ों को 26 प्रतिशत आरक्षण दिया था, एक सेक्युलर नेता के रूप में वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने ने पिछड़े वर्गों में वंचितों को अलग से वर्गीस्कृत किया, कर्पूरी ठाकुर को इस महान कार्य के लिये हमेशा याद किया जायेगा।

अनीस मंसूरी ने कहा कि यदि केंद्र सरकार सच में पिछडो के उत्थान एवं सम्मान के लिये समर्पित है तो पूर्व के भांति जो 27 प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था की गई थी उसमे आरक्षण के अतरिक्त जो जनरल कैटेगरी में मैरिट के आधार पर सेलेक्ट होते थे, वर्तमान सरकार में ओबीसी और एससी आरक्षण कोटे में सीमित कर दिया है यह व्यवस्था खत्म होनी चाहिये।

अनीस मंसूरी ने कहा कि केंद्र व राज्य की सरकारों में जो पिछड़ी जाति के नेता जो बड़े पदों पर बैठे हैं उन्हे कर्पूरी ठाकुर फार्मूला पूरे देश में लागू कर ने के लिये आवाज क्यों नहीं उठाते? उन्हें लगता हैं कि यदि पिछड़ों के हित में आवाज उठाएंगे तो उनका राजनैतिक और व्यक्तिगत हानि हो सकती हैं।

गर्भ गृह में रुपयों से भरा पर्स यूपी एसएसएफ कर्मी ने किया वापस

प्राण प्रतिष्ठा के दिन तमिलनाडु से शामिल होने आई थी महिला

अयोध्या।राम जन्मभूमि परिसर में राम लला को दर्शन कराने में सुरक्षा कर्मियों की श्रद्धालुओं के मुताबिक सराहनीय भूमिका नजर आ रही है।वही बुधवार को यूपी एसएसएफ के निरीक्षक द्वारा प्राण प्रतिष्ठा के दिन तमिलनाडु से आई एक महिला का 66 हजार से अधिक रुपयों से भरा पर्स महिला द्वारा भेजे गये व्यक्ति को वापस किया।बताते चलें उक्त महिला का पर्स गर्भ गृह में गिर गया था।जिसकी प्रशंसा उक्त महिला के साथ साथ वहां पर आये श्रद्धालुओं ने भी किया। इस संबंध में उत्तर प्रदेश विशेष सुरक्षा बल के निरीक्षक यशवंत सिंह यादव ने बताया कि प्राण प्रतिष्ठा के दिन आमंत्रण पत्र राम जन्मभूमि परिसर में गर्भ गृह में तमिलनाडु से आई महिला जानकी ओंबु उम्र करीब 70 वर्ष भगवान राम के प्राण प्रतिष्ठा में आई थी।दर्शन के दौरान गर्भ गृह में उनका लेडीज पर्स छूट गया।इस संबंध में उन्होंने बताया कि सूचना पर चेकिंग प्रभारी विशेष सुरक्षा बल के इंस्पेक्टर मानवेंद्र पाठक के पहुंचने पर विशेष सुरक्षा बल के उप निरीक्षक ओंकार नाथ त्रिपाठी द्वारा एक लावारिस बैग के बारे में सूचना दी गई।चेकिंग अधिकारी मानवेंद्र पाठक ने गहनता से जांच पड़ताल कर इत्मीनान होने पर पर्स का निरीक्षण किया तो उनमें कुल 66290 रुपए, पूजन सामग्री,आधार कार्ड मिला।जिसकी सूचना कंट्रोल रूम व पुलिस चौकी को दिया।बैग में मिले आधार कार्ड के मोबाइल नंबर से संपर्क किया गया तो पता चला यह पर्स जानकी वेंबु निवासी तमिलनाडु की रहने वाली है। उक्त महिला से संपर्क करने पर बताया कि हम तमिलनाडु वापस आ गए हैं। आपके पास मेरे लड़के का दोस्त श्री निवास जायेंगे उनको पहचान सुनिश्चित करने के बाद मेरा पर्स दे दीजिएगा। जिसके चलते 24 जनवरी को श्री निवास अयोध्या आकर संपर्क किया और वीडियो कॉल पहचान सुनिश्चित करने के उक्त महिला का पर्स उसे वापस कर दिया गया। जिसकी प्रशंसा उक्त महिला व पर्स लेने वाले व्यक्ति के अलावा वहां पर मौजूद सभी श्रद्धालुओं ने भी किया।

भारतीय ज्ञान परंपरा गवर्नेन्स के लिए महत्वपूर्ण: प्रो. एचसी पुरोहित

प्रबंधन अध्ययन संकाय के वैदिक अध्ययन केंद्र में हुआ विशेष व्याख्यान

ब्यूरो प्रमुख

विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय के प्रबंधन अध्ययन संकाय में वैदिक अध्ययन केंद्र द्वारा आयोजित विशेष व्याख्यान में दून विश्वविद्यालय देहरादून के प्रबंध संकाय के संकायाध्यक्ष प्रोफेसर एचसी पुरोहित ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा गवर्नेन्स एवं नेतृत्व के लिए महत्वपूर्ण है । भारतीय ज्ञान परंपरा ज्ञान का उपयोग होगा तो समाज के प्रत्येक व्यक्ति को न्याय एवं निष्पक्ष भाव से नीति निर्धारण में सहयोग करने के अवसर प्राप्त होंगे । आज आवश्यकता ऐसे ही समाज के निर्माण की है, जहां राग द्वेष खत्म हो और आपस में भाईचारा स्थापित हो। प्रोफेसर पुरोहित ने कहा कि विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हमें इन्हीं प्रसंग एवं उदाहरण से प्रेरणा लेकर नीतियों का निर्माण करना होगा पिछले 10 वर्षों में गरीबी रेखा से करोड़ों लोग बाहर आए आवश्यकता है कि युवा शक्ति को और मजबूती मिले और इसके लिए कौशल विकास जैसे कार्यक्रम ग्रामीण स्तर पर बृहद स्तर पर पैमाने पर संचालित किए जाने होंगे ताकि वह स्वरोजगार की ओर स्वतः प्रेरित होकर उद्यमिता स्वयं का उद्यम प्रारंभ करने की स्थिति में होंगे। वैदिक शास्त्रों एवं ग्रंथो के अनुरूप नारी शक्ति, महिला सशक्तिकरण केंद्रित समाज की स्थापना करके ही भारत विश्व का नेतृत्व करने में सक्षम होगा।

इस दृष्टि से हमें आध्यात्मिकता प्रेरित नेतृत्व की आवश्यकता है और हमें खुशी है कि पूरा विश्व आज भारत की ओर आशा भरी निगाहों से देख रहा है। क्योंकि विश्व के कई देशों में आपस में अशांति एवं द्वंद चल रहा है, ऐसे में भारतीय ज्ञान पर आधारित नीति निर्धारण से ही शांति एवं प्रसन्नचित समाज की स्थापना की जा सकती है । इस अवसर पर विषय प्रवर्तन करते हुए प्रोफेसर अविनाश पाथर्डीकर ने वैदिक अध्ययन केंद्र के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला । प्रोफेसर मानस पांडेय ने स्वागत एवं धन्यवाद दिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ आशुतोष कुमार सिंह ने किया। इस अवसर पर डॉक्टर रसिकेश, जनसंपर्क अधिकारी डॉ अमित वत्स, सुशील कुमार, आलोक गुप्ता, डॉ इंद्रेश गंगवार, डॉ अभिनव, अनुपम कुमार, श्री ज्ञानेन्द्र, डॉक्टर अंजली, मनोज, राकेश उपाध्याय, अभिनव, अनुपम कुमार उपस्थित थे ।

मनाई गई सुभाष चन्द्र बोस की जयंती

संवाददाता

वाराणसी,। सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय में नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की 127 वीं जयंती पराक्रम दिवस के रूप में मनाई गई। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो बिहारी लाल शर्मा ने कहा भारत के स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी तथा सबसे बड़े नेता थे। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान, अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिए, उन्होंने जापान के सहयोग से आजाद हिंद फौज का गठन किया था। उनके द्वारा दिया गया ष्जय हिंदष का नारा भारत का राष्ट्रीय नारा बन गया है।

नगर निगम में भ्रष्टाचार के खिलाफ युवक ने किया अर्ध नग्न प्रदर्शन

संवाददाता

लखनऊ,। नगर निगम में भ्रष्टाचार के खिलाफ मंगलवार को एक व्यक्ति ने अर्ध नग्न प्रदर्शन करने लगा। आरोप है कि उसके वार्ड में अलाव के लिए लकड़ी नहीं मिलती है। उसके अलावा स्ट्रीट लाइट नहीं जल रही है। प्रदर्शनकारी राकेश यादव ने बताया कि कई बार शिकायत के बाद भी काम नहीं हो रहा है। इसकी वजह से स्थानीय लोगों का रहना मुश्किल हो गया है। उन्होंने कहा कि इंजीनियर किशोरी लाल के खिलाफ भी आरोप लगाया। बताया कि नगर निगम भ्रष्टाचार में डूबा हुआ है।

हिन्दी सांध्य दैनिक देश की उपासना

स्वात्वाधिकारी में. प्रभुदयाल प्रकाशन की ओर से श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक द्वारा देश की उपासना प्रेस, उपासना भवन, धर्मसारी, प्रेमापुर, जौनपुर उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं प्रकाशित ।

सम्पादक

श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव

मो0–7007415808,9628325542,9415034002

RNI संन्दर्भ संख्या – 24/234/2019/R-1

deshkiupasanadailynews@gmail.com

समाचार–पत्र से सम्बन्धित समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जौनपुर न्यायलय होगा।